खंड : XIV अंक : 1 व 2

जनवरी - फरवरी, 2002

चैतन्य लहरी

आत्मा पहिए की सुस्थिर धुरी के समान है। निरन्तर गतिशील जीवन के पहिए के मध्य में स्थित अडोल धुरी पर यदि हमारा चित्त टिक जाता है तो हम आन्तरिक शान्ति के स्रोत और पूर्ण शान्ति एवं आत्म ज्ञान की अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं।

परम पूज्य माताजी
(परा आधुनिक युग)

दिवाली पूजा

शूडी कैम्प, 1988

ग्रीन द्वीप, आस्ट्रेलिया के पास नौका में यात्रा करते हुए श्री माताजी

1 कृष्ण पूजा, काना जोहरी, अमेरीका – 29.7.2001

14 जन कार्यक्रम, रॉयल अलबर्ट हॉल, लन्दन, 14.7.2001

22 महा शिवरात्रि पूजा, पंढरपुर, 29.2.1984

32 शक्ति देवी पूजा, मास्को, 17.9.1995

43 श्रीमाताजी के अवतरण की भविष्यवाणी

44 भविष्य दर्शन : भारत का और दुनिया का

48 आवाजें

49 सहजयोग का सार तत्व

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू एच एस 2/47 कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–15
फोन : 5447291, 5170197

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :–
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 (G-11) ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 7013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी–17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

श्री कृष्ण पूजा

निर्मल नगरी

काना जोहरी, अमेरीका–29.7.2001

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहाँ पर श्री कृष्ण की, जो कि विराट थे, पूजा करने के लिए एकत्रित हुए हैं। बिना रणक्षेत्र में प्रवेश किए उन्होंने सभी प्रकार की आसुरी शक्तियों से युद्ध किया। श्री कृष्ण का जीवन अत्यन्त सुन्दर, सृजनात्मक एवं प्रेममय है परन्तु उन्हें समझ पाना सुगम नहीं है। उदाहरण के तौर पर कुरूक्षेत्र में, जहाँ युद्ध हो रहा था, अर्जुन एकदम हतोत्साहित हो गए और कहने लगे, "हमें क्यों युद्ध करना चाहिए, क्यों हमें अपने सगे सम्बन्धियों से युद्ध करना चाहिए, क्यों हमें अपने समीप के सम्बन्धियों से, गुरुओं और मित्रों से युद्ध करना चाहिए? क्या यही धर्म है, क्या यही धर्म है?" इससे पूर्व गीता में श्री कृष्ण ने पैगम्बर के व्यक्तित्व का वर्णन किया है। ऐसे व्यक्ति को हम सन्त कह सकते हैं। उन्होंने ऐसे व्यक्ति को स्थितप्रज्ञ कहा। उनसे जब स्थित प्रज्ञ की परिभाषा पूछी गई तो उन्होंने बताया कि स्थितप्रज्ञ वह व्यक्ति होता है जो अपने अन्दर पूर्णतः शान्त हो और अपने वातावरण में भी शान्तिपूर्वक रह सके। अत्यन्त आश्चर्य की बात है। गीता में उन्होंने ये सारा ज्ञान बताया। यही ज्ञान सर्वोत्तम है और इसे उन्होंने ज्ञानमार्ग का नाम दिया। यही सहजयोग है जिसके द्वारा आप सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु जब आरम्भ में अर्जुन को यह शिक्षा देते हुए सुनते हैं तो आश्चर्य होता है। तो वो आध्यात्मिकता की बात कर रहे हैं, पूर्ण निर्लिप्तता की बात कर रहे हैं और वहाँ दूसरी ओर अर्जुन से कह रहे हैं, "तुम जाओ और युद्ध करो, वे सब लोग तो पहले से ही मृत हैं तुम किससे युद्ध करने जा रहे हो?" इस द्वन्द को समझ पाना कठिन है कि ये समझाने वाला व्यक्ति कि आप सबको स्थित प्रज्ञ बनना है अचानक अर्जुन को कहने लगता है कि तुम जाओ और अपने शत्रुओं से युद्ध करो! एक ओर तो पूर्ण निर्लिप्तता है और दूसरी ओर वे युद्ध करने को कहते हैं! इस बात का वर्णन आप किस प्रकार करेंगे? श्री कृष्ण के अपने शब्दों में व्यक्ति कह सकता है कि एक बार यदि आप आत्मसाक्षात्कारी हो जाएं, चेतना की उच्च स्थिति को प्राप्त कर लें तो सभी कुछ निरर्थक है। परन्तु इस क्षण तुम्हें धर्म की रक्षा करनी है, उस धर्म की नहीं जिसकी तुम बातें करते हो। परन्तु धर्म का अभिप्राय मानव की उत्थान प्रक्रिया से है जो चल रही है और सारे लोग जो धर्मपरायणता के पक्षधर हैं यदि समाप्त हो जाऐंगे तो उत्थान की ये शक्ति किस प्रकार बचाई जा सकेगी? इस कार्य के लिए तुम्हें धर्मपरायण लोगों की रक्षा करनी होगी और तुम्हें किसी को मारना नहीं है वे तो पहले से ही मृत हैं क्योंकि वो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं है और न ही वे

आत्मसाक्षात्कार की परवाह करते हैं। अतः तुम्हें उनसे युद्ध करना होगा, नकारात्मक शक्तियों से तुम्हें युद्ध करना होगा, आसुरी लोगों से तुम्हें युद्ध करना होगा। इन सारी चीज़ों का वर्णन वे अत्यन्त सुन्दर ढंग से करते हैं। वो कहते हैं कि हमारे अन्दर तीन प्रकार की शक्तियाँ हैं इन शक्तियों को हम भी भली भांति जानते हैं और ये भी कि मध्य शक्ति से हम सभी भौतिक, शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक, सभी प्रकार की समस्याएं जो हमारे सामने मुँह खोले खड़ी हैं, से ऊपर उठते है और आध्यात्मिकता के नए साम्राज्य में प्रवेश करते हैं। इसी चीज़ की रक्षा उन्होंने करना चाही। क्रूर लोगों से, आक्रामक लोगों से, पथ भ्रष्ट करने वाले लोगों से उन्होंने रक्षा करनी चाही। यदि आपको इस बात की समझ हो कि आपका सम्बन्धी कौन है, आपका भाई कौन है, आपकी बहन कौन है तो यह अत्यन्त सुन्दर सूझ–बूझ है। *केवल साक्षात्कारी व्यक्ति ही आपके सम्बन्धी हैं। ये आपके अपने हैं और इनके लिए यदि आपको आक्रामक लोगों से युद्ध करना पड़े तो अच्छा होगा कि आप ये युद्ध करें, आपको ये युद्ध करना हैं। धर्म का यही मार्ग है।*

जैसे आप सहजयोग में जानते हैं हमारे समक्ष तीन मार्ग हैं। *एक भक्ति मार्ग है,* भक्ति में आप परमात्मा के गुणगान करते हैं उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं, सभी प्रकार के कर्म काण्ड करते हैं, आदि–आदि और आप सोचते हैं कि आप परमात्मा के बहुत निकट हैं। इस मार्ग को बहुत अधिक लोगों ने स्वीकार किया है और बहुत से धर्मों ने भी स्वीकार किया है कि परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण हममें होना आवश्यक है। परमात्मा में किस प्रकार आपकी पूर्ण श्रद्धा हो सकती है? अभी तक तो परमात्मा से आपका योग ही नहीं हुआ। किस प्रकार आपमें ये श्रद्धा हो सकती है? आप क्या कर रहे हैं, किस प्रकार आपका समर्पण परमात्मा के प्रति हो सकता है जिस परमात्मा से आपका योग ही नहीं हुआ?

दूसरा मार्ग कर्म का है कि आपको कार्य करना है। निर्लिप्त मस्तिष्क से आप अपना कार्य करते चले जाएं। मेरा अभिप्राय ये है कि ऐसा कर पाना सम्भव नहीं है। परन्तु लोग ऐसा ही कहते हैं कि हम अपने कर्म कर रहे हैं। अच्छे कर्म कर रहे हैं। सभी प्रकार के अच्छे कार्य हम करते हैं, अपनी शुद्धीकरण के लिए भिन्न स्थानों पर जाते हैं, बहुत से आध्यात्मिक लोगों से भी मिलते हैं, भिन्न स्थानों पर जाकर परमात्मा की प्रार्थना करते हैं, सभी शुभ स्थानों की यात्रा करते हैं, सभी ऐसे स्थानों की जिनका शास्त्रों में वर्णन है। इसके लिए हम सभी प्रकार के कर्मकाण्ड करते हैं। यही कर्म है। परन्तु हमारे अनुसार ये कर्म नहीं आक्रामकता है (Right Side)। आप जानते हैं कि बहुत से लोग अत्यन्त आक्रामक हैं। आक्रामक लोग अत्यन्त अहंकारमय तथा अक्खड़ होते हैं और वे अपना कोई अन्त नहीं समझते। उन्हें सुधारना बहुत कठिन

कार्य है। अपनी कोई कमी उन्हें नज़र नहीं आती। जो भी कार्य वे करते हैं वो सोचते हैं कि वो ठीक हैं। ये कर्म योग है। परन्तु श्री कृष्ण ने कहा है कि जो भी कर्म आप करो उसके जो भी फल हों, आप नहीं जानते कि ये क्या फल हैं उन्होने अत्यन्त अनिश्चित रूप से ये सब कहा क्योंकि यदि उन्होंने पूर्ण निश्चित रूप से कहा होता तो लोग उन्हें कभी नहीं समझते। उन्होंने कहा, कि ये सम्भव नहीं है कि जो कर्म आप कर रहे हैं वो ऐसे कर्म हों जो आपको परमात्मा के आशीर्वाद दिला सकें। उन्होंने ये बात कही, "कर्मण्येवाधिकारस्ते फलेषु मा कदाचने।" जो भी कर्म आप करो उनके फल मुझ पर सौंप दो। तो हमें कौन से कर्म करने चाहिएं या हमें कर्म करने छोड़ देने चाहिए? क्या हमें सारी गतिविधियाँ त्याग देनी चाहिएं? लोग द्वन्द की स्थिति में फँस गए। श्री कृष्ण की यही शैली है–लोगों को द्वन्द में फँसाना ताकि वे अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग करें।

तीसरे स्थान पर विवेक सद्–सद् विवेक बुद्धि है जिसे उन्होंने ज्ञान मार्ग कहा। यह मध्य नाड़ी है जिसके द्वारा आपका उत्थान होता है। आप एक नई अवस्था में, अपने मस्तिष्क की एक नई अवस्था में, अपने अस्तित्व की एक नई अवस्था में उन्नत होते हैं और सभी प्रकार की मूर्खताओं से पूर्णतः ऊपर उठ जाते हैं। आपमें सभी बुराइयों से, सभी प्रकार के भ्रष्टाचार से, जो कि इस संसार को नष्ट कर रहे हैं, लड़ने की शक्ति आ जाती है। इस अवस्था में आपको इतनी शक्ति प्राप्त हो जाती है कि आप अपने चहुँ और विद्यमान नकारात्मक शक्तियों को समाप्त कर सकते हैं। ये बात समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि यह एक अवस्था है, ये केवल जुबानी जमा खर्च नहीं है। ये केवल यह मान लेना नहीं है कि मैं वह हूँ। ये तो एक अवस्था है। आप यदि उस अवस्था तक पहुँच जाएं जहाँ आप इन सब चीज़ों से ऊपर उठ जाएं, जहाँ आपके पास सारा ज्ञान हो, शुद्ध ज्ञान हो, अस्तित्व का सूक्ष्म ज्ञान। यही ज्ञान मार्ग है। बहुत से लोग कहते हैं कि हर कोई ज्ञान मार्ग को नहीं पा सकता। उसके लिए आपका एक विशिष्ट व्यक्तित्व होना आवश्यक है। परन्तु ये सारी बातें भ्रामक हैं। सभी लोग ज्ञान मार्ग को प्राप्त कर सकते हैं। हमारे अन्दर यह अन्तर्जात है। यह उत्थान की उपलब्धि है। यह हमारे अन्दर विद्यमान है और हम सब इसे प्राप्त कर सकते हैं। केवल एक बात है कि हममें आत्मविश्वास नहीं है शायद इसी कारण हम इससे बचते रहते हैं और घटिया चीजों की तरफ बढ़ते हैं जैसे किसी के प्रति भी समर्पित हो जाना, किसी प्रकार का कर्मकाण्ड करना, किसी पावन स्थान पर जाना, सभी प्रकार की मूर्खताएं करना। परन्तु ये सब आपको उत्थान नहीं प्रदान करतीं, उत्थान जिसके द्वारा आप ज्ञान प्राप्त करते हैं–शुद्ध ज्ञान, वास्तविक ज्ञान। आज तक आपने जो भी कुछ जाना वह

सब पुस्तकों में लिखा हुआ है या उसे आपके माता–पिता ने आपको बताया या वह सब जानकारी जिसकी खोज आपने बाहर की। परन्तु शुद्धतम ज्ञान, सच्चा ज्ञान जो वास्तविक ज्ञान है इसे आप केवल अपने उत्थान द्वारा ही पा सकते हैं और अपने अन्दर स्थापित हो सकते हैं। भली–भांति उस अवस्था में स्थापित हो सकते हैं। आप यदि इसे नकारते रहें तो आप कभी इसे समझ न पाएंगे। परन्तु सबका अधिकार है कि इसे पा लें। इसके लिए शिक्षित होना आवश्यक नहीं, बहुत अधिक सहज व्यक्ति होना भी आवश्यक नहीं, बहुत अधिक अमीर या गरीब होना भी आवश्यक नहीं। इन चीज़ों से कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तक आप मानव हैं और विनम्र हैं और ये सोचते हैं कि आपको ये अवस्था प्राप्त करनी है, आप सब इस अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

इस बात को आप सब भली–भाँति जानते हैं। उस अवस्था में पहुँचकर आप अत्यन्त ज्ञानमय हो जाते हैं, अपने विषय में ज्ञानमय, अन्य लोगों के विषय में ज्ञानमय, हर उस चीज के विषय में जो आपके चहुँ ओर है। परन्तु इस अवस्था को बनाए रखना और इससे भी ऊपर उठना है जहाँ किसी भी प्रकार का कोई सन्देह न रह जाए। श्री कृष्ण ने यही बात सिखाई और यही उपलब्धि व्यक्ति को प्राप्त करनी है। परन्तु उन्होंने नीतिवेत्ता की तरह से ये सारी बात की। उन्होंने आपको भिन्न प्रकार कहानियाँ सुनाने का प्रयत्न किया, ऐसा कर लें वैसा कर लें। परन्तु वास्तव में उन्होंने ज्ञान मार्ग की सराहना की।

हमारा भी ज्ञान मार्ग है। ये ज्ञान है, ज्ञान का वह मार्ग है जिसमें आपको पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना है। जब तक आप पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते तब तक आप ज्ञानी नहीं हैं। इस प्रकार उन्होंने ये बात स्थापित कर दी कि हमारी उत्थान प्रक्रिया अन्य सभी मानवीय चेतनाओं से ऊपर आ चुकी है। आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए अन्य सभी मानवीय चेतनाएं मूल्यहीन हैं। अब उसे कुछ ज्ञान है, वह जानता है कि यहाँ से न्यूयार्क तक कितने मील का फासला है या कौन सी रेल वहाँ जाती है। यह ज्ञान सच्चा ज्ञान नहीं है। इस कपड़े का मूल्य क्या होगा, ये कालीन कितने की है, कौन सी दुकान से आप इसे खरीद सकते हैं? ये सारा ज्ञान व्यर्थ है। ये सच्चा ज्ञान नहीं है, ऐसे व्यक्ति (आध्यात्मिक) को इन चीज़ों का ज्ञान नहीं होता परन्तु उसका ज्ञान हमारे अस्तित्व का ज्ञान होता है, पूरे ब्रह्माण्ड का ज्ञान होता है। इस ज्ञान में ये नहीं होता कि सितारों की संख्या कितनी है या ब्रह्माण्ड कितने हैं, नहीं। यह तो 'पूर्ण' का सूक्ष्म आन्तरिक व्यक्तित्व होता है। वह व्यक्ति इसके विषय में सब कुछ जानता है। उस सूक्ष्मता में वह उन बहुत सी चीज़ों को खोज लेता है जिनके विषय में शायद उसने कभी सुना ही न हो और इस प्रकार व्यक्ति महान ज्ञानमय व्यक्तित्व की अवस्था

तक पहुँच जाता है। यही अवस्था हमने प्राप्त करनी है। हमारा जन्म मानव के रूप में हुआ और हमें पहले से ही बहुत सी चीज़ों का ज्ञान है। लोगों को बहुत सी चीज़ों का ज्ञान है परन्तु वास्तविकता का ज्ञान नहीं है। ये ज्ञान पुस्तकें पढ़ने या बौद्धिक खोज या भावनात्मक गतिविधियों से नहीं प्राप्त होगा, नहीं। यह शाश्वत है सदा मौजूद है। ये अस्तित्व में है और अस्तित्व में रहेगा। आपने इसको समझना है और ज्ञान प्राप्त करना है कि ये क्या है, ये परिवर्तित नहीं हो सकता, इसे कोई दूसरा आकार नहीं दिया जा सकता। ये जो है वही है और अब आपको इसी का ज्ञान प्राप्त हो गया है। इस पर कोई सन्देह नहीं कर सकता क्योंकि जिन लोगों को ये अवस्था प्राप्त नहीं हुई केवल वही इस पर सन्देह कर सकते हैं, आपको सनकी कह सकते हैं, कुछ भी सोच सकते हैं। परन्तु आँखे खोलकर आप जो कुछ भी कहते हैं वह सत्य होता है। इसी प्रकार खुले दिल और दिमाग से आप इस बात को समझते हैं कि यही वास्तविक सत्य है और इसी ज्ञान को प्राप्त किया जाना चाहिए।

श्री कृष्ण के अनुसार इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए साधक को बहुत सी परीक्षाओं में से गुज़रना होता है। एक रास्ता ये है कि आप उनकी (श्री कृष्ण की) स्तुति गान करते रहें। वे कहते हैं, "आप मेरी प्रार्थना करते रहो, वे कहते हैं आप मुझे पुष्प जल या जो भी कुछ अर्पण करेंगे मैं उसे स्वीकार करता हूँ–'पुष्पम्, फलम्, पत्रम् तोयम्'। परन्तु वे स्पष्ट कहते हैं कि ऐसा करने से आपको क्या प्राप्त होता है यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने कभी भी नहीं कहा कि आप यदि मुझे कुछ अर्पण करोगे तो मैं भी आपको कुछ दूंगा ऐसा कभी भी नहीं कहा। तो कौन सी अवस्था होना चाहिए? स्थिति क्या होनी चाहिए? उन्होंने कहा, "आप यदि मेरी स्तुति करेंगे, मेरी भक्ति करेंगे, मुझे भेंट चढ़ाएंगे, वो सब कुछ तो ठीक है। आप अत्यन्त समर्पित हैं परन्तु आपको 'अनन्य' भक्ति करनी होगी। उन्होंने अनन्य शब्द का प्रयोग किया जिस का अर्थ होता है कि कोई अन्य नहीं होगा। जब हमारी एकाकारिता होती है, जब हमारी तार जुड़ जाती है, उस वक्त जो भी भक्ति आप करेंगे, जो भक्ति संगीत आप गाएंगे, जो भी पुष्प आप अर्पण करेंगे, जो भी अभिव्यक्ति आप करेंगे, वह अनन्य होनी चाहिए। उन्होंने यही शब्द कहा कि अनन्य भक्ति करें। जो भी कुछ आप मुझे अर्पण करेंगे मैं वह स्वीकार करूंगा। वे सभी कुछ स्वीकार करेंगे। केवल वही भोक्ता हैं अर्थात आनन्द लेने वाले हैं। परन्तु आपको क्या प्राप्त होगा? श्री कृष्ण कहते हैं कि जब आप अनन्य भक्ति करते हैं अर्थात मुझसे आपकी समग्रता होती है तो मुझसे आपका योग घटित होता है।

इस प्रकार स्पष्ट शब्दों में उन्होंने भक्ति का वर्णन किया परन्तु लोग यह बात नहीं समझते। वो सोचते हैं कि भक्ति का अर्थ

गलियों में खड़े होकर 'हरे रामा, हरे कृष्णा' गाते चले जाना है। उनके अनुसार यही भक्ति है। वास्तविकता यह नहीं है। यदि ऐसा करना ठीक होता तो उन्हें कुछ प्राप्त हो गया होता, कुछ तो प्राप्त हो गया होता! परन्तु उन्हें तो कुछ भी नहीं मिला। इसके लिए श्रीकृष्ण को दोष नहीं दिया जाना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि अनन्य भक्ति होनी चाहिए। केवल वस्त्र परिवर्तन से, विशेष प्रकार के वस्त्र पहनकर कुछ नहीं होगा। ये सब बाह्य है। केवल दिखावा है। वास्तव में अनन्य भक्ति आपके अन्दर होती है। जब आप उस अवस्था में होते हैं तब आप परमात्मा से एकरूप होते हैं। जब तक आप उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेते, इतना ही नहीं, जब तक आप उसमें स्थापित नहीं हो जाते, आपको कुछ प्राप्त नहीं होता। बहुत से लोगों ने मुझे बताया कि "हम इतना भक्ति योग कर रहे हैं, फिर भी हमें कुछ प्राप्त नहीं होता"। वास्तव में! कैसा भक्ति योग?" हम श्री कृष्ण की गीता पढ़ते हैं, प्रतिदिन प्रातः चार बजे उठकर स्नान करते हैं, कृष्ण गीता का पाठ करते है, ये करते हैं, वो करते हैं। तब हम भजन गाते हैं, परन्तु हमें कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। इसका क्या कारण है? कारण ये है कि परमात्मा से आपकी एकाकारिता नहीं है। और जब आप परमात्मा से एकरूप होते हैं तब परमात्मा आपको क्या देते हैं? वो आपको घटिया नश्वर भौतिक पदार्थ नहीं देते, शाश्वत स्वभाव का कुछ वरदान आपको देते हैं। वे आपको शान्ति प्रदान करते हैं, हृदय की शान्ति। वे आपको सन्तुलन प्रदान करते हैं शान्तमय स्वभाव व आनन्दमय जीवन भी वे आपको प्रदान करते हैं। योगेश्वर से योग प्राप्त करने के पश्चात, उनसे एकरूप होने के पश्चात जब हम भक्ति करते हैं तो हमारे अन्दर ये गुण जागृत हो जाते हैं।

यही बात व्यक्ति को समझनी है। बहुत से कर्मयोगी पागलों की तरह से कार्य किए चले जाते हैं, बिल्कुल पागलों की तरह से। वो समझते हैं कि हम निष्काम कर्म कर रहे हैं। बिना किसी इच्छा के हम लोगों की सेवा कर रहे हैं, देश की सेवा कर रहे है, सभी की सेवा कर रहे हैं। अन्ततः ऐसे लोगों को क्या प्राप्त होता है? हो सकता है उन्हें धन प्राप्त हो जाए, हो सकता है आपको एक अच्छा घर मिल जाए, हो सकता है आपको ये सभी चीज़ें मिल जाएं परन्तु हृदय की शान्ति आपको नहीं प्राप्त होती। वह आनन्द जो असीम है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती, वह गहन आनन्द आपको नहीं प्राप्त होता। आपको वह शाश्वत शान्ति भी नहीं प्राप्त होती जो युद्ध रोक सकती है। यह शान्ति मानव स्वभाव की क्रूरता को पूर्णतः समाप्त कर सकती है। यह आपको प्राप्त नहीं होती। इसके अतिरिक्त आपको शक्तियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं। आपको ज्ञान प्राप्त हो जाता

है– ज्ञान, सभी के विषय में सूक्ष्म ज्ञान। सभी के विषय में आप जान जाते हैं कि उनमें क्या कमी है। अपने तथा अन्य लोगों के विषय में आपको ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह ज्ञान आपको विद्यालय या महाविद्यालय में नहीं मिलता। यह तो आपके अपने अन्दर ही ज्ञान का सागर है। जो कुछ भी आप देखना चाहते हैं, जो कुछ भी आप प्राप्त करना चाहते हैं, सब वहाँ विद्यमान है। यही सच्चा ज्ञान है जिसे सूक्ष्म ज्ञान के माध्यम से आप प्राप्त कर लेते हैं। सूक्ष्म ज्ञान अर्थात चक्रों का ज्ञान, ब्रह्माण्ड का ज्ञान। इससे आप सभी कुछ प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु अन्य लोगों को ज्ञान देने में आपकी रुचि बहुत बढ़ जाती है। तब आप बहुत सी चीज़ें जानना नहीं चाहते। साहूकारी (ठंदापदह) के विषय में जानने की क्या आवश्यकता है? ये जानने की क्या आवश्यकता है कि विश्व का सबसे ध नी व्यक्ति कौन है? तब आप ये बाते नहीं जानना चाहते। आपका पूरा दृष्टिकोण ही बदल जाता है और आपको शान्त मस्तिष्क प्राप्त हो जाता है जिसे हर वांछित चीज का ज्ञान होता है। व्यक्ति को यही प्राप्त करना है। आपका देश अमेरीका बहुत अधिक कर्मकाण्डी है। ये हर समय काम–काम में ही लगे रहता है। काम का नशा इन्हें मद्यपान सम है। वे घोर परिश्रम करते हैं परन्तु उन्हें क्या मिलता है? आपके बच्चे भी नशे के आदि हो जाते हैं, आपकी पत्नियाँ इधर–उधर भागी फिरती हैं। आपके परिवार टूट जाते हैं, उनमें कोई शान्ति नहीं होती, आप युद्ध भड़काते हैं? बात केवल इतनी सी है कि अभी तक इस देश की रक्षा की जा रही है। परन्तु आप लोगों ने बहुत से मूल निवासियों को नष्ट कर दिया है और बहुत सी मौलिक चीज़ों को समाप्त कर दिया है। उन चीज़ों को जिनको संभाला जाना चाहिए था। एक दिन वो आएगा जब वे लोग महसूस करेंगे कि वो जो कुछ करते रहे वो वास्तव में गलत था। एक दिन ऐसा आएगा जब अमेरीका में बहुत से आत्मसाक्षात्कारी लोग होंगे। परन्तु आज की स्थिति तो ये है कि धनार्जन के विचार से लोग पगला गए हैं। परन्तु अब उन्हें लगता है कि अति हो गई है बस, तो अब क्या करें? अब क्या करें–सहजयोग में आ जाएं।

सहजयोग करें तब आपको अपने जीवन की सारी निधि प्राप्त हो जाएगी, वह निधि जो आपके अन्दर है। यह आपको वह सारा सुख, सारा आनन्द प्रदान करेगी, सारी वरिष्ठता प्रदान करेगी जो महान वैभव और महानतम शक्ति आपको प्रदान कर सकती है। हमें केवल इतना करना होगा कि सहजयोग अपना ले और अन्य लोगों को भी सहजयोगी बनाएं ताकि वो भी शान्ति, आनन्द और सन्तोष को प्राप्त कर सकें। ऐसा हो जाने पर एक चीज़ से दूसरी की ओर दौड़ने का पागलपन समाप्त हो जाएगा क्योंकि इन भौतिक चीज़ों से आप कभी भी सन्तुष्ट नहीं होते। आज

आप एक चीज़ खरीदना चाहते हैं, तो कल दूसरी।

परन्तु कभी भी आप सन्तुष्ट नहीं होते। अपनी इच्छाओं से कभी भी आपको आनन्द प्राप्त नहीं होता। अतः आपकी केवल एक ही शुद्ध इच्छा होनी चाहिए कि परमात्मा से एक रूप हो जाएं। केवल इसी प्रकार ये सब कार्यान्वित होगा।

श्री कृष्ण की विशेषता थी कि वे सदैव आत्मसाक्षात्कारी लोगों का, उचित मार्ग पर चलने वाले लोगों का, धर्म निष्ठ लोगों का साथ देते थे। किसी ऐसे व्यक्ति का साथ वो न देते थे जो धन बाहुल्य के कारण अपने को बहुत महान समझता हो। दुर्योधन ने श्री कृष्ण को अपने महल में आतिथ्य स्वीकार करने का निमंत्रण दिया परन्तु श्री कृष्ण दासी पुत्र विदुर के यहाँ गए क्योंकि विदुर आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति थे। वो आत्मसाक्षात्कारी थे। श्री कृष्ण की दृष्टि में वे दुर्योधन से कहीं अधिक महान थे। निःसन्देह दुर्योधन राजा थे परन्तु अत्यन्त धूर्त और बुरे व्यक्ति थे।

अतः सद् सदविवेक बुद्धि आपका स्वभाव बन जाती है। तब आप सदैव सन्तुष्ट रहते हैं। क्योंकि आप जानते हैं कि आप कोई गलत कार्य नहीं कर रहे। सद्–सद् विवेक बुद्धि श्री कृष्ण का वरदान है। अन्य चीजों के साथ वे हमें सद्–सद् विवेक बुद्धि का भी वरदान देते हैं। आपको सत्य–असत्य में अन्तर करने का ज्ञान देना उनकी शैली है। चैतन्य लहरियों के माध्यम से आप सत्य– असत्य का अन्तर जानने में कुशल हो जाते हैं। चैतन्य लहरियों पर आप सभी कुछ जान जाते हैं। अन्य लोग चाहे आप पर विश्वास न करें, ये अन्य बात है, परन्तु आप जान जाते हैं, ठीक क्या है और गलत क्या है। कि यह सब श्री कृष्ण का वरदान है।

जैसा कि आप जानते हैं, वे हमारे अन्तःस्थित सोलह उपकेन्द्रों का नियंत्रण करते हैं। वे हर चीज़ का नियंत्रण करते हैं–आपके गले, नाक, आँखें और कानों का वे नियंत्रण करते हैं। इन सभी चीजों का वे नियंत्रण करते हैं। वो कहते हैं कि वे विराट हैं विराट का अर्थ महान, महान भगवान जिसे हम अकबर भी कहते हैं। मुसलमान भी इसको स्वीकार करके कहते हैं अल्लाह–ओ–अकबर। पद्य में होने के कारण यह (गीता) कुछ स्पष्ट है और कुछ स्पष्ट नहीं है। परन्तु वे विराट थे और अपना विराट रूप उन्होंने अर्जुन को दिखाया। उनका विराट रूप देखकर अर्जुन आश्चर्यचकित रह गया। वे ही विराट हैं, सभी कुछ उनमें समाया हुआ है, सभी कुछ उनका ग्रास है। वे यम हैं अर्थात मृत्यु के देवता हैं। वो बहुत कुछ हैं। उनके अनन्त नाम हैं। ये सभी शक्तियाँ उनमें हैं और आवश्यकता अनुसार वे उसका उपयोग करते हैं।

तो सहजयोगियों में सर्वप्रथम संतोष की शक्ति होनी चाहिए। यह विस्मयकारी शक्ति है। सन्तोष की शक्ति का उपयोग करें।

यहाँ पर आप सब लोग इतना आनन्द ले रहे है, इतनी प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं। यह क्या दर्शाता है कि आप अत्यन्त सन्तुष्ट हैं, अन्यथा कोई भी यहाँ रहना पसन्द न करता। लोग कहते, "नहीं हम कोई अच्छा स्थान लेना चाहेंगे। ये क्या है? सब लोगों के साथ हम यहाँ नहीं रहना चाहते।" परन्तु अन्य लोगों के साथ मिलकर रहना, यह सामूहिकता भी श्रीकृष्ण का आशीर्वाद है। वे आपको सामूहिकता सिखाते हैं, सामूहिकता का आनन्द, सामूहिकता का मज़ा। जो व्यक्ति अकेला रहता है, दूसरों से कटा रहता है वह तो शराबी की तरह से है। वह श्री कृष्ण का पुजारी नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण की पूजा करने वाला व्यक्ति तो सभी लोगों का आनन्द लेता है, विशेष रूप से यदि वह आत्मसाक्षात्कारी हो तो व्यक्ति उनकी संगति का पूरा आनन्द उठाता है। आप उनके जीवन से ये बातें सुगमता से समझ सकते हैं। आप देखें कि आप लोग मिलकर किस प्रकार प्रसन्नता और नैतिकता पूर्वक, पूर्ण कुशलता से, बिना कोई अनैतिक कार्य किए, बिना कुछ चुराए, अन्य लोगों के लिए बिना कोई दुर्भावना रखे आनन्द पूर्वक रहते हैं। आपमें ये आश्चर्यजनक घटना घटित हुई है कि अत्यन्त प्रसन्नता और सत्य पूर्वक आप मिल जुल कर यहाँ रह रहे हैं।

उनकी इस सामूहिकता को समझ जाना चाहिए क्योंकि मैं सदैव ये कहती हूँ कि श्री कृष्ण अमेरीका के शासक देव हैं। अमेरीका भी अत्यन्त सामूहिक है क्योंकि यह सभी देशों में रुचि लेता है, सभी देशों की चिन्ता करता है। परन्तु गलत ढंग से उनकी सहायता करने का प्रयास करता हैं। इसकी शैली कभी ठीक नहीं होती। अब मान लो कोई देश नशीले पदार्थ उत्पन्न करता है तो अन्य देशों पर आक्रमण करने के स्थान पर यह उस देश पर आक्रमण क्यों नहीं करता? यह ऐसा देश है। सद्–सद्–विवेक का इसमें पूर्ण अभाव है। सद्–सद्–विवेक प्राप्त किए बिना आप उचित रूप से अपनी संघ शक्ति (Power of Collectivity) का प्रयोग नही करते। यद्यपि वे सामूहिक हैं परन्तु उन्होंने कौन सा सामूहिक कार्य किया है? अब भी वो यही कहना चाहते हैं कि वे अलग हैं, वे भिन्न हैं। "जिन भी समस्याओं का हम सामना कर रहे हैं वह हमारी अपनी हैं"। अतः श्रीकृष्ण के अपने ही देश में इस सामूहिकता को इतना कम कर दिया गया है! यद्यपि उनके अन्दर ये बात है, ये भावना है कि वे सभी देशों के विषय में बात करें, सभी देशों का नेतृत्व करें फिर भी उन्हें चाहिए कि वे सभी देशों की राय पूछें। परन्तु उन देशों के विषय में अमरीका सदैव गलत निर्णय लेता है। ऐसा सद्–सद्–विवेक बुद्धि के अभाव के कारण होता है। उनमें सद्– सद्–विवेक होना चाहिए।

विशुद्धि चक्र के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है परन्तु इस वक्त मैं विशुद्धि के दोनों ओर स्थित दो चक्रों के विषय में चिन्तित हूँ। विशुद्धि के बाई ओर

का चक्र ललिता चक्र है और दाईं ओर पर श्री चक्र। महिलाओं को सदा मैंने यही सुझाव दिया है कि इन्हें ढक कर रखें। यह बहुत साधारण प्रतीत होता है परन्तु यह बहुत महत्वपूर्ण है। नंगा रखकर इनका प्रदर्शन न करें क्योंकि इनकी शक्तियों को बचाकर रखना चाहिए। श्री चक्र और ललिता चक्र दोनों ही अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मैं कहूंगी कि ये दोनों मादा शक्तियां हैं, दोनों श्री कृष्ण की मादा शक्तियाँ हैं। ये बात समझी जानी आवश्यक है कि जिस प्रकार से आप अपने चक्रों का सम्मान करते हैं वैसी ही आपके चक्रों की स्थिति हो जाती है। उन्हीं के अनुपात में आप कष्ट भुगतते हैं। उदाहरण के रूप में आप यदि श्री गणेश का सम्मान नहीं करते तो आपको कष्ट होगा और यदि आप गणेश का सम्मान करते हैं परन्तु उचित ढंग से बर्ताव नहीं करते तो भी आपको कष्ट होगा, आपको समस्याएं होंगीं।

अतः पूरा शरीर प्रतिक्रिया करता है। बाह्य प्रभावों के प्रति शरीर इस प्रकार से प्रतिक्रिया करता है कि आप देखने लगते हैं कि कहीं कुछ खराबी है जिसके कारण आप इस प्रकार से व्यवहार कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त आँखें भी विशुद्धि चक्र की देन हैं। अतः किसी भी चीज को देखते हुए आपकी दृष्टि अत्यन्त पवित्र होनी चाहिए। दृष्टि जितनी पवित्र होगी उतना ही अच्छी तरह से आप उसका आनन्द लेंगे। परन्तु दृष्टि यदि अपवित्र है, अस्थिर है, इधर–उधर भटकती रहती है तो वास्तव में आप धर्म के विरोध में जा रहे हैं, अपनी विकास प्रक्रिया के विरुद्ध चल रहे हैं और एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब आप अन्धे हो जाएं या आपकी आँखों में मोतियाबिन्द उतर आए। आपको सभी प्रकार के चक्षु रोग हो सकते हैं जिनकी तरफ ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

यह चक्र जिह्वा से भी जुड़ा हुआ है। यह जिह्वा की देखभाल करता परन्तु जिन लोगों को भयानक बातें कहने की आदत होती है या जो लोग अचानक कटु शब्द उपयोग करते हैं या किसी के विषय में अपशब्द बोलकर उसके पीछे पड़ जाते हैं तो ये सारी चीजें जिह्वा के लिए हानिकारक होती हैं। श्री कृष्ण को यह सब पसन्द नहीं है। यदि अपनी जिह्वा का उपयोग आप अन्य लोगों को कठोर शब्द कहने के लिए उपयोग करते हैं या उनके प्रति व्यंग्य करते हैं, गाली–गलौच करते हैं, तो मैं नहीं जानती कि एक दिन आपकी जिह्वा किस प्रकार की प्रतिक्रिया करेगी? यह भिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया करेगी, हो सकता है कि ये मोटी हो जाए और हिले ही नहीं। परमात्मा जाने कि ये अन्दर की ओर खिंच जाए! यह तो इसका शारीरिक पक्ष है। परन्तु इसका मानसिक पक्ष भी होता है। तब आपको ये नहीं पता चलता कि आप किस बारे में बातचीत कर रहे हैं। आप कहना कुछ चाहेंगे और कहेंगे कुछ और। ये जिह्वा के कारण ही सम्भव है। ऐसी भी

पूर्ण सम्भावना होती है कि व्यक्ति बिल्कुल बोल ही न सके! बिल्कुल कुछ न बोल सके। जिह्वा को यदि इस प्रकार कष्ट दिया जाएगा, गलत कार्य के लिए इसका उपयोग किया जाएगा तो कुछ भी सम्भव है। गाली–गलौच के लिए या अपना उल्लू सीधा करने के लिए विनम्रता पूर्वक बात करने के लिए जिह्वा नहीं बनी है। इस प्रकार के कार्य जिह्वा के लिए बहुत खतरनाक हैं इनसे आपकी जिह्वा पर छाले पड़ सकते हैं जो इस सीमा तक बिगड़ जाते हैं कि कटुभाषी को जिह्वा का कैंसर भी हो सकता है।

कुछ लोग सोचते हैं कि हर चीज़ को सहन किए चले जाना ठीक है। यह ठीक नहीं है। कोई यदि आपको सता रहा है तो आप इसे सहन करने का प्रयत्न न करें। इसका मुकाबला करें क्योंकि यदि आप इसे सहन किए चले जाते हैं तो आप बाईं ओर को जा सकते हैं और कैंसर जैसे भयानक रोग के शिकार हो सकते हैं। आपको कैंसर हो सकता है। जो लोग आक्रामक हैं उन्हें भी रोग हो सकते हैं और जो लोग सहिष्णु हैं उन्हें भी कष्ट हो सकते हैं।

अतः आपको सन्तुलित अवस्था में रहना है व्यर्थ की चीज़ों को सहन नहीं करना। मान लो कोई आपको गाली देता है तो आप बिल्कुल चुप रहें, केवल उस व्यक्ति की ओर देखें, बस। समझ लें कि वह अत्यन्त मूर्ख है। परन्तु उन गालियों को स्वीकार न करें। गालियाँ स्वीकार करके यदि आप रोते बिलखते हैं तो आपको कैंसर हो सकता है। परन्तु मान लो कोई आपको कुछ कहता है और आप जानते हैं कि वह अत्यन्त मूर्ख है तो उससे परे रहें, आपको कुछ भी न होगा। अतः दोनों ही प्रकार से सावधान रहना होता है क्योंकि श्रीकृष्ण आपके आस–पास लीला कर रहे हैं और वो देखते हैं कि आप किस सीमा तक जा सकते हैं

अब गला–गला बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें गले की देखभाल करनी चाहिए। जो लोग चीखते चिल्लाते रहते हैं अन्ततः उनकी वाक् शक्ति समाप्त हो जाती है। गले की समस्या के कारण वे पगला जाते हैं। विशेष रूप से उन्हें गले के सृजन की भयानक बीमारी हो जाती है, इसे सर्प रोग कहा जाता है और व्यक्ति का साँस घुट जाता है।

अतः जब भी किसी से बात करें अत्यन्त स्पष्ट एवं मधुर ढंग से बात करें। कभी भी किसी पर चिल्लाएं नहीं। अपनी वाणी में कभी चिड़चिड़ा पन न लाएं। आप यदि चिड़चिड़े हैं तो कैंसर की शुरूआत हो सकती है। अतः आपको दोनों ही तरह से सावधान होना होगा क्योंकि आप सहजयोगी हैं। आपको ये ज्ञान प्राप्त करना होगा कि आपको क्या नहीं करना है। कोई यदि कुछ बेवकूफी भरी बात करे तो उसे सहन नहीं करना अर्थात उसे स्वीकार नहीं करना। कोई यदि आपको कुछ कह दे तो कभी

कभी उसे इसके विषय में बता दें कि तुम इस प्रकार से कह रहे थे, वास्तव में बात ऐसी नहीं है।" बेहतर होगा कि इन चीजों को सहन न करें। आप ईसा मसीह नहीं है। उनकी शक्तियाँ आपके पास नहीं हैं। आप अगर ऐसा (सहन) करेंगे तो आपको परिणाम भुगतने पड़ेंगे। अतः मध्य में रहने का प्रयत्न करें। सब चीज़ों को देखते हुए चाहे आक्रामकता हो या सहिष्णुता, दोनों में से चाहे कोई भी चीज़ हो, आपको इन दृष्टिकोणों के सम्मुख हार नहीं माननी चाहिए। मजबूती से अपने पैरों पर डटे रहने का दृष्टिकोण अपने में विकसित करें। उदाहरण के रूप में मैंने एक चीनी कहानी पढ़ी थी। एक राजा चाहता था कि उसके दो मुर्गे दंगल जीतें। लोगों ने उसे कहा कि वह अपने मुर्गे फलां महात्मा के पास भेजकर उन्हें प्रशिक्षित करवाएं। राजा ने अपने मुर्गे महात्मा के पास भेज दिए। उन्हें लाया गया तो वे अडोल खडे हुए थे। अन्य मुर्गे जब उन पर आक्रमण करने लगे तब भी वे निश्चित खडे रहे। दूसरे मुर्गे प्रयत्न करते रहे, प्रयत्न करते रहे परन्तु ये मुर्गे डटे रहे। परिणामस्वरूप सारे मुर्गे भाग गए। आपका चरित्र भी ऐसा ही होना चाहिए। किसी के सामने आपको इसलिए नहीं झुक जाना कि वह आक्रामक है और न ही स्वयं आक्रामक होकर किसी को सताना है और न किसी के सिर पर सवार होना है। ऐसा करना गले के लिए बहुत भयानक है। ऐसे गले को सदैव भयानक रोग ग्रस्त हो जाने का भय बना रहता है। ये सब मैंने आपको इसलिए बताया कि विशुद्धि चक्र के विषय में हम बहुत सी बातें जानते हैं। विशुद्धि चक्र का हमें बहुत सूक्ष्म ज्ञान होना चाहिए। इस बात का हमें थोड़ा सा ज्ञान होना चाहिए कि यदि हम विशुद्धि चक्र को नहीं सम्भालेंगे तो इसके साथ क्या हो सकता है।

तो ये सब श्री कृष्ण के कार्य हैं। वो हमारे दाँतों की भी देखभाल करते हैं, कानों की भी देखभाल करते हैं। आप जानते है कि दाँत और कानों का क्या करना है। ये उनके सोलह कार्य हैं। हम इन्हें कलाएं भी कह सकते हैं, सोलह कलाएं जिन पर ये भिन्न भिन्न स्तर पर कार्य करते हैं। आपको भी चाहिए कि भिन्न क्रियाओं तथा मार्गों द्वारा और ये समझकर कि विशुद्धि चक्र का मूल्य न समझने पर हमें क्या कष्ट हो सकते हैं अपने विशुद्धि चक्र की शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न करें।

अमेरीका क्योंकि पूरे विश्व का विशुद्धि चक्र है अतः यह आवश्यक है कि वहाँ के कार्यकारी लोग विशुद्धि चक्र की सारी शक्तियों को समझें और ये भी ज्ञान उन्हें हो कि इन शक्तियों को किस प्रकार सुरक्षित करना है तथा किस प्रकार इनका प्रसार पूरे विश्व में करना है। ये दोनों हाथ जो कि विशुद्धि चक्र से आ रहे हैं इनसे आपने सहजयोग का प्रचार करना है। सहजयोग प्रसार के लिए आपको भिन्न देशों, भिन्न संसारों में जाना है, यहाँ तक कि छोटे–छोटे

गाँवों में भी जाना है। पहले आप चैतन्य लहरियों को महसूस कर लें। इसका अर्थ ये है कि परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति को आप अपने हाथों में महसूस करते हैं।

ये वह सामूहिक शाश्वत प्रेम है जो आपके हाथों पर आता है और आपको सिखाता है।

अतः यह इतना महत्वपूर्ण चक्र है। इसी प्रकार अमेरीका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अमेरीका के नागरिक होने के नाते आपको चाहिए कि यहाँ धर्म को बनाए रखें और विश्व की समस्याओं के लिए गहन सूझबूझ का सृजन करें और सभी देशों के लोगों को प्रेम प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें

जन कार्यक्रम

रॉयल अलबर्ट हॉल, लन्दन, 14.7.2001

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सभी सत्य साधकों को मेरा नतमस्तक प्रणाम। आपमें से कुछ ने सत्य को प्राप्त कर लिया है। कुछ ने पूरी तरह से सत्य को प्राप्त नहीं किया है पर कुछ साधकों ने इसे बिल्कुल भी प्राप्त नही किया है। आज की परिस्थितियों पर यदि आप दृष्टि डालें तो आपको स्वीकार करना पड़ेगा कि आज चहुँ ओर बहुत भयंकर उथल पुथल है। एक के बाद एक देश सभी बुराइयों को अपना रहे हैं। गहन शीत युद्ध चल रहा है। लोग एक दूसरे का वध कर रहे हैं। सुन्दर स्थानों का विध्वंस किया जा रहा है। बिना किसी वजह के एक दूसरे के गले काटे जा रहे हैं। हम सब परमात्मा द्वारा सृजित मानव हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा ने सभी मानवों का सृजन किया है और उन्हें मानवीय चेतना के स्तर पर लाया है।

इन परिस्थितियों में हमें देखना है कि सामूहिक रूप से हम किस दिशा की ओर चल पड़े हैं। क्या हमारा यही लक्ष्य है? या क्या यही हमारा भाग्य है? क्या मानव का भाग्य यही है कि वह भूमि या अन्य चीज़ों के लिए एक दूसरे को नष्ट कर दे। पूरे विश्व को एक नीडम् मानकर सोचें कि सर्वत्र क्या घटित हो रहा है। प्रतिदिन आप समाचार पत्र पढ़ते हैं और हर रोज़ उनमें भयानक खबरें होती हैं कि मानव बिना किसी कारण के एक दूसरे को नष्ट करने का भयानक कार्य कर रहा है। हमें सोचना होगा कि हमारा अन्तिम लक्ष्य क्या है और हम किधर जा रहे हैं? क्या हम नर्क में जा रहे हैं या स्वर्ग में। हमारे चहुँ ओर कैसी परिस्थितियाँ है और इन्हें ठीक करने में क्या आप सहायक बन सकते हैं?

मानव के साथ सबसे बड़ी समस्या ये है कि अभी तक भी वे अज्ञानता के पूरे नियंत्रण में है। मैं तो इसे अज्ञानता ही कहूँगी और इस अज्ञानता में इस अंधकार में मानव ये सब भयानक कृत्य कर रहा है। कोई भी ये नहीं समझना चाहता कि हम पूर्ण विनाश के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर रहे। क्या यही हमारा लक्ष्य है कि हम पूरी तरह से नष्ट हो जाएं? किसी भी राष्ट्रीयता या किसी भी धर्म या सभी प्रकार की अच्छी चीजों के नाम से हम कौन सा अच्छा कार्य कर रहे हैं, हम तो सारे दुष्कर्म कर रहे हैं युद्ध कर रहे हैं। युद्ध करना श्रेष्ठता नहीं है। कोई भी व्यक्ति जो हमारे अन्दर की घृणा को बढ़ावा दे सके हम उससे घृणा करते हैं और मेरी समझ में नहीं आता इस बात को पसन्द किया जाता है। और इसके बहाने से, इसके पथ प्रदर्शन से हम समूह बनाते हैं!

ये सब इसलिए घटित हो रहा है कि यह अन्तिम निर्णय का समय है। मैंने आपको बताया है कि यह अन्तिम निर्णय है। और यह अन्तिम निर्णय वास्तव में इस बात का फैसला करेगा कि किनकी रक्षा की जानी चाहिए और किनको पूर्णतः नष्ट हो जाना चाहिए। यह अत्यन्त–अत्यन्त गम्भीर चीज़ है। जिन लोगों को भी इसके बारे में ज्ञान है उन्हें इसके विषय में सोचना चाहिए। यहाँ–वहाँ थोड़ी बहुत जोड़ा जाड़ी करने से कार्य न होगा। चाहे जो कुछ भी आप करते रहें जब तक आप मानव का हृदय परिवर्तन नहीं करते इसे बचाया नहीं जा सकता। ये हृदय परिवर्तन असंभव चीज़ नहीं है, यह कठिन भी नहीं है। ये परिवर्तन का समय है, परिवर्तन का यही अवसर है, इसे हमारे अन्दर स्थापित किया गया है। इस शक्ति की शक्ति रूप में व्याख्या की गई है। यह रहस्यमय मादा शक्ति है जो हमारे अन्दर विराजमान है। सभी ने लिखा है, यह बात कहने वाली मैं पहली व्यक्ति नहीं हूँ। परन्तु संभवतः अब तक कोई भी इसे न तो समझ सका न ही स्वीकार कर सका कि ये घटना हमारे अन्दर घटित हो।

आपका जन्म केवल मानव बनने के लिए नहीं हुआ बल्कि महा मानव बनने के लिए हुआ है। आपको आनन्द लेना होगा। आपका जीवन आनन्द लेने के लिए योग्य होना चाहिए। ये आशीर्वादों से परिपूर्ण होना चाहिए। जीवन अभिशाप नहीं होना चाहिए। सुबह से शाम तक इस विषय में चिन्ता उस विषय में चिन्ता। परमात्मा ने मानव की इसलिए सृष्टि नहीं कि की आप लड़ाई–झगड़े के लिए, रक्षा के लिए हर समय चिन्ता करें। परमात्मा ने आपकी इसलिए सृष्टि की है कि आप पूर्ण शान्ति और तदातम्य तथा आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करें। इसलिए हमारा सृजन हुआ है, यही हमारा लक्ष्य है। मैं ये बात आपको केवल बता नहीं रही, ये वास्तविकता है।

अतः हमें परिवर्तित होना होगा, ये परिवर्तन कठिन नहीं है। परन्तु मैं ये देखती हूँ कि किसी भी चीज़ से आप सन्तुष्ट हो जाते हैं। हिन्दू लोग मन्दिर में जाते है और कहते हैं, "ओह! हमने महान कार्य किया। ईसाई चर्च जाकर सोचते हैं कि उन्होंने बहुत महान कार्य किया है! मुसलमान जाकर नमाज़ पढ़ते हैं और सोचते हैं वो अत्यन्त महान हैं! इन सबने क्या प्राप्त किया? अपना सामना करें। कृपा करके अपनी सीमाओं का अपनी कमियों का सामना करें अपनी समस्याओं का सामना करें और स्वयं अपने लिए देखें कि क्या आप अपनी समस्याओं का समाधान कर सके हैं, क्या आप स्वयं को विपदाओं से बचा सके हैं? हो सकता है कि ये विपदाएं उन लोगों को नष्ट करने के लिए आती हैं जो मानव को हानि पहुँचा रहे हैं। तब तो यह परमात्मा का लक्ष्य होगा। परन्तु आपका लक्ष्य क्या है? आप ये क्यों नहीं सोचते कि "मैं वो व्यक्ति नहीं हूँ जो पत्थर है। मैं वह व्यक्ति हूँ जो आनन्द और प्रेम का स्रोत है। मैं

केवल बातें नहीं कर रही हूँ। मैं वास्तव में चाहती हूँ कि आप सब अपना आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करें।"

आत्मसाक्षात्कार है क्या? यह स्वयं को पहचानना है। आप स्वयं को नहीं पहचानते, नहीं पहचानते आप स्वयं को। बिना स्वयं को पहचाने आप इस विश्व में जिए जा रहे हैं। क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं। आप नहीं जानते कि आप क्या हैं, आप नहीं जानते कि आप आत्मा हैं, तथा ज्ञान, शुद्ध ज्ञान का स्रोत हैं। कई बार मैं लोगों को किसी बाबाजी की सभा में बैठे हुए देखती हूँ जो उन्हें कथाएं सुना रहा होता है और लोग अत्यन्त प्रसन्न हैं। इन कथाओं से न तो आपको वास्तविकता का ज्ञान होगा न सत्य का। सत्य और वास्तविकता को यदि आप प्राप्त करना चाहते हैं तो ये समझने का प्रयत्न करें कि कुछ घटित होना होगा। आपके अन्दर कोई परिवर्तन घटित होना आवश्यक है। जब तक आप उस बिन्दू तक नहीं पहुँच जाते तब तक आप पर्याप्त रूप से सूक्ष्म नहीं हैं, न ही आपने सूक्ष्मताओं को जाना है। इसके लिए आपको अपना परिवार त्यागने की, अपने बच्चे त्यागने की, घरबार त्यागने की, जंगल जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसा कहना बड़ा अच्छा लगेगा कि "ठीक है, आप सब लोग सन्यास ले लें और अपना सारा सामान मुझे दे दें"। कितना मूर्खतापूर्ण विचार है ये!

ये आपात स्थितियाँ हैं। आप आपात स्थितियों में रह रहे हैं। इस बात को समझने का प्रयत्न करें और मैं आपको चेतावनी देना चाहती हूँ यदि आप अपने अन्तस में गहन नहीं उतरते और ये नहीं देखते कि आप क्या हैं और अपने परिवर्तन को नहीं अपनाते तो कुछ भी घटित हो सकता है। आपको सभी प्रकार के रोग हो रहे हैं। बच्चों की सभी प्रकार की समस्याएं खड़ी हो रही हैं, राष्ट्रीय स्तर पर भिन्न प्रकार की समस्याएं हैं, ऐसी समस्याएं जिनका समाधान लोग नहीं कर पाते। अतः हमें इनसे बाहर निकलना होगा और अत्यन्त सत्यनिष्ठ और दृढ़ व्यक्तित्व बनना होगा।

हम नहीं जानते कि सत्य क्या है? हम तो पशुओं से भी बदतर हो गए हैं, पशुओं की भी आँखें खुली हुई हैं परन्तु हमारी आँखें बन्द हैं। ये बात मैं आपकी भर्त्सना करने के लिए नहीं कह रही हूँ आपको सावधान करने के लिए कह रही हूँ। आपको जागरूक करने के लिए कह रही हूँ कि मानव को परिवर्तित होना होगा। अन्यथा आज आपने मेरा भाषण सुन लिया और कल किसी और के भाषण में चले जाएंगे। ये तो रोज़मर्रा का मनोरंजन है। परन्तु लक्ष्य को जब मैं देखती हूँ तो मेरी समझ में नहीं आता कितने लोग जा पाएंगे, कितने समाप्त हो जाएंगे! उनके साथ क्या घटित होगा, कौन सी बीमारियाँ उन्हें लग जाएंगी, कौन सी समस्याओं में वे फँस जाएंगे, उनके बच्चों का क्या होगा, उनके देश का क्या

होगा, इस पूरे विश्व का क्या होगा? मैं आपके दृष्टि क्षेत्र का विस्तार कर रही हूँ। ये मेरा स्वप्न है कि विश्व के सभी लोग परिवर्तित हों। हमारे अन्दर शत्रु निहित है और जब हम जेहाद की बात करते हैं तो हम कहते हैं कि हमें अपने अन्दर के शत्रुओं से युद्ध करना होगा। हमारे शत्रु कौन से हैं?

आजकल सबसे भयानक शत्रु है हमारा लोभ। इस लोभ के कारण लोग कुछ भी कर सकते हैं। इस लोभ के कारण सभी प्रकार के कुकृत्य हो रहे हैं। लोगों के पास धन होगा, उन्हें सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त होंगी, परन्तु ये लोभ इतनी आसुरी चीज़ है कि आप ये भी नहीं देखते कि आपके पास क्या चीज़ है! आप अधिक और अधिक पा लेना चाहते हैं। चाहे किसी को धोखा देना पड़े, अपने संबंधियों को धोखा देना पड़े, सभी को धोखा देना पड़े और इस प्रकार सबका पैसा हथिया लेना चाहते हैं।

हमारा दूसरा बड़ा शत्रु क्रोध है। क्रोध हमें चीज़ों की वास्तविकता नहीं देखने देता। छोटी–छोटी चीज़ों के लिए हम गुस्से हो जाते हैं। जैसे मैं इस देश में आई। मैंने देखा है कि लोग भिन्न रंग को देखकर ही क्रुद्ध हो जाते हैं! मेरी समझ में नहीं आता। परमात्मा ने भिन्न रंग बनाए हैं। अगर ऐसा न होता तो हम एक सेना की तरह से दिखाई पड़ते और जीवन अत्यन्त दयनीय हो गया होता। अतः प्रकृति ने रंगों का सृजन किया, कुछ लोग श्वेत हैं और कुछ अश्वेत। इससे क्या फर्क पड़ता है? मेरी समझ में नहीं आता। इस प्रकार की मिथ्या बातें चल रही हैं। इन मिथ्या चीज़ों के कारण लोग युद्ध कर रहे हैं। गोरे लोग कालों से युद्ध कर रहे हैं और काले गोरों से लड़ रहे हैं। और फिर यही गोरे लोग अपनी चमड़ी का रंग बदलने के लिए जाकर धूप–स्नान करते हैं और तेज धूप के कारण चर्म कैंसर का शिकार बनते हैं! इस बात को मैं नहीं समझ पाती, इसका कोई औचित्य नहीं है। हमारे अन्दर ये देखने भर को सन्तुलन भी नहीं है कि हम क्या कर रहे हैं? अपने इतने बहुमूल्य समय को, जब हमें ये परिवर्तन प्राप्त कर लेना चाहिए, क्या हम बर्बाद कर रहे हैं? किसी भी चीज़ के कारण क्रोध आ सकता है, किसी भी चीज़ के कारण गुस्सा भड़क सकता है। ये तो मानवीय स्वभाव की तरह से है जो कि बहुत आम है। छोटी–छोटी चीज़ों के लिए लोग गुस्से हो जाते हैं और ये गुस्सा उन्हें पसन्द है क्योंकि इस गुस्से से वो दूसरों को सताते हैं और आक्रामक हो जाते हैं। इसलिए वो चाहते हैं कि उनमें गुस्सा हो और इस गुस्से से वो अन्य लोगों पर प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न करते हैं। ये बहुत बड़ी समस्या है। क्यों हम दूसरे लोगों को सताना चाहते है? क्यों हम उन पर नियंत्रण करना चाहते हैं, स्वयं पर तो हम निर्णय नहीं कर पाते, किसलिए हम दूसरे लोगों पर नियंत्रण करना चाहते हैं? इसकी क्या आवश्यकता है?

इसके बाद मोह हमारा महा शत्रु है। घरों के लिए मोह, भूमि के लिए मोह, बच्चों के लिए और सभी चीजों के लिए मोह। परन्तु कल जब हम यहाँ न होंगे, खुले हाथों से जाना पड़ेगा, कुछ भी हम साथ न ले जा पाएंगे। अतः इस प्रकार की लिप्साओं को परिवर्तित होना होगा। लोग अपनी कार, अपने घर, उनकी देख–रेख के विषय में अत्यन्त तुनक मिजाज हैं। परन्तु आपके अपने विषय में क्या है? क्या आप ठीक हैं, अन्दर से क्या आप पूर्णत शान्त व आनन्दमय हैं? गुस्से में क्यों अपनी शक्ति को बर्बाद कर रहे हैं? यह ऐसे जीवन का चिन्ह है जिसे नष्ट होना होगा। किसी दूसरे व्यक्ति को जब आप देखते हैं तो दुर्बलताएं दिखाई देती हैं। धन के अतिरिक्त महिलाएं, ये दुर्बलता भी आम बात है। महिलाओं की पुरुषों के प्रति दुर्बलताएं। वे स्वयं को आकर्षक बनाने का प्रयत्न करती हैं, किसलिए? सभी ने वृद्ध होना है। महिलाओं के पीछे या विपरीत लिंग के पीछे दौड़कर आपने क्या प्राप्त किया? आपको गरिमा का, आत्मसम्मान का कोई विवेक नही है। आप यदि अक्खड़ हैं तो बहुत अच्छे वस्त्र पहनते हैं। और स्वयं को बहुत अच्छा समझते हैं ये कोई तरीका नहीं है। हमें अन्तर्अवलोकन करके स्वयं देखना होगा कि हम ऐसा क्यों कर रहे हैं। मूर्खतापूर्ण चीजों में अपनी शक्ति को क्यों बर्बाद कर रहे हैं? मैं बहुत से लोगों से मिलती हूँ उनमें से बहुत से अर्धपागल हैं और कुछ पूर्ण पागल। वो मुझे बताते हैं कि वे एक महिला विशेष से या पुरुष विशेष से विवाह करना चाहते थे आदि आदि। किस तरह से वो ये सारी चीजें कर पाते हैं और कह पाते हैं? इन सारी चीजों से कोई महान नहीं बन सकता।

अपने अन्दर अत्यन्त शक्तिशाली बनना होगा, अपनी आत्मा को महसूस करना होगा। आप आत्मा हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा के प्रतिबिम्ब के रूप में आत्मा आपके अन्दर विराजमान है। आप अत्यन्त सशक्त बन सकते हैं और यदि आप आत्मा बन जाएं तो आप पूर्ण गरिमामय तथा सन्तुलित हो सकते हैं। आत्मा और आध्यात्मिक जीवन के विषय में आपने बहुत सुना है परन्तु क्या आप इस स्तर तक पहुँच सकें? चाहे आप ज़ेन प्रणाली के विषय में, ताओ प्रणाली के विषय में, बाइबल, कुरान पढ़ते हैं तब भी आप क्या जानते हैं कि आत्मा के उस बिन्दु तक कैसे पहुँचा जा सकता है? नहीं, अभी तक नहीं जानते। आपको समझना होगा क्योंकि आप अत्यन्त महान हैं, अत्यन्त बहुमूल्य हैं और अन्दर से आप अत्यन्त सुन्दर हैं परन्तु आपको इसका ज्ञान नहीं है। आपको आत्मा बनना होगा। ये बनना बहुत महत्वपूर्ण है।

इसके लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा ने आपके अन्दर व्यवस्था की है, इसे कुण्डलिनी कहते हैं। इसकी जागृति हो सकती है और ये जागृति आपको आत्म–साक्षात्कार दे सकती है, आत्म ज्ञान दे सकती है। इसे आत्म–साक्षात्कार भी कहते हैं। आपके

जीवन में इस आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह पूर्णतः निशुल्क है, इसके लिए आप कोई धन नहीं दे सकते। कितना धन आप इसके लिए दे सकते हैं? जब ये पूर्णतः निशुल्क है तो क्यों नहीं आप आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर लेते और क्यों नहीं आप उत्थान को प्राप्त करते? आपका न करना क्या धर्म के कारण है? सभी धर्मों ने इसके विषय में कहा है। मोहम्मद साहब ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से कहा, "पुनरुत्थान के समय आपके हाथ बोलेंगे। क्या आपके हाथ बोल रहे हैं? हिन्दू इसके विषय में जानते हैं कि हमें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना है। इन बाबाजी लोगों को सुनने से या इन्हें पैसे देते रहने से कोई लाभ न होगा। इस प्रकार के कर्मकाण्ड जो हम कर रहे हैं ये तो हमारे पूर्वज भी करते रहे। उन्होंने क्या प्राप्त किया? कुछ नहीं।

अतः यह जान लेना हमारे लिए आवश्यक है कि हमें अपनी उत्थान की प्रक्रिया को आत्मसाक्षात्कार के बिन्दु तक ले जाना होगा। हम यदि पूर्ण होते तो कोई समस्या न होती, हम यदि आत्मसाक्षात्कारी होते तो कोई समस्या न होती। सभी प्रकार का स्वार्थ, सभी प्रकार की सीमाएं हमने अपने पर लगा ली हैं। सभी प्रकार का बन्धन, सभी प्रकार का अहं हमारे जीवन में कार्यरत है और हम पर शासन कर रहा है। हमें इसके चंगुल से निकलना होगा। एक बार जब आपका योग हो जाता है तो आप इससे मुक्त हो जाते हैं। किसी को ये बताना नहीं पड़ता कि आप योग पा लें। आपके सभी बन्धन छुट जाते हैं। आपमें ऐसे बन्धन हैं कि आप फलां देश से, फलां धर्म से इससे या उससे सम्बन्धित हैं। आप किसी चीज़ से सम्बन्धित नहीं हैं। आपका सम्बन्ध परमात्मा के साम्राज्य से है। हमें यही प्राप्त करना है। वहीं पर आपको होना चाहिए। परन्तु अब भी यदि आप कथाएं पसन्द करते हैं तो इसका तो कोई अन्त नहीं है। आप अपना समय व्यर्थ कर रहे हैं। समय घटता चला जा रहा है। मैं यहाँ पर मेरे विचार से पिछले बीस वर्षों से हूँ। मैंने घोर परिश्रम किया। परन्तु क्या देखती हूँ कि लोगों को जिस बात का ज्ञान होना चाहिए था उस बात का ज्ञान उन्हें नहीं है। वो ऐसे लोगों को पसन्द करते हैं जो बहुत सुगम चीज़े बताते हैं या उनका मनोरंजन करते हैं।

अतः पूर्ण मानवता को समझना होगा कि आज ही प्रलय का दिन है। प्रलय समीप है और अत्यन्त सुगम बात ये है कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर रहे हैं। ऐसा करना बहुत आसान है। न तो आपको इस पर कोई समय खर्च करना है और न ही पैसा। कोई परिश्रम भी आपको नहीं करना। आप अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लें और अपने घर पर दस पन्द्रह मिनट ध्यान धारणा पर लगाएं। हमारा मस्तिष्क हर समय हमारे दुर्व्यवहारों को न्यायोचित ठहराता है। मैं इसे दुर्व्यवहार

कह रही हूँ। ये सत्य के विरोध में है, परमात्मा की इच्छा के विरुद्ध है, मानवता के विरुद्ध है और ये सारी अच्छी चीजों को नष्ट कर देता है।

ये सारे बन्धन त्यागने होंगे और ये जानना होगा हम सब एक हैं। हम विश्वस्तरीय हैं। रंग, प्रजाति और धर्म के कारण हम एक दूसरे से अलग नहीं हैं। ये बात हमें जाननी होगी कि हम एक हैं और इस एकता को और एकरूपता को केवल नारों और शोरशराबों से स्थापित नहीं करना चाहिए। ये एकरूपता क्या होनी चाहिए, ये बात अपने हृदय में महसूस की जानी चाहिए। ये बनावटी नहीं है, इसे वास्तविक होना होगा। वास्तविक एकरूपता। और ये आपमें तभी आती है जब आप महसूस कर लेते हैं कि आप विराट के अंग–प्रत्यंग हैं। धर्म आपको चेतना के इस बिन्दु तक ले आते हैं। युद्ध और हत्याओं की प्रवृत्ति आपको यहाँ तक नहीं लाई। तो क्यों मानव ने अपना मुख मोड़ लिया? क्योंकि उसे धर्मपरायणता का ज्ञान बिल्कुल नहीं है, क्योंकि उसके मन में लोभ भरा हुआ। अपने, अपने परिवार और अपने सम्बन्धियों के प्रति मोह। आप अपने तक ही क्यों सीमित रहना चाहते हैं? आप आत्मा हैं और आत्मा तो सागर है, प्रेम का, ज्ञान का और आशीर्वादों का सागर।

अतः हमें निर्णय लेना होगा। आज मुझे यही प्रार्थना करनी है कि बहुत ज्यादा समय शेष नहीं है। हमें निर्णय करना होगा। हमें आत्मा बनना है। सभी धर्मों ने यही बात सिखाई हैं, परन्तु इस बात का वर्णन नहीं किया गया कि किस प्रकार आत्मा बनना है और यह कार्यान्वित नहीं हुआ। कुछ लोगों ने आत्मसाक्षात्कार पा लिया परन्तु उनका विश्वास नहीं किया गया, किसी ने उनकी बात नहीं सुनी। लोगों ने उनकी हत्याएं की, उन्हें सताया और सूली पर चढ़ा दिया। परन्तु अब आप लोग कृपा करके इस बात को समझें। इसके मूल्य को समझें कि आप लोग मानव क्यों हैं? किसलिए आपका सृजन किया गया है, इसके पीछे क्या उद्देश्य है? क्या आप मूर्खतापूर्ण चीज़ों के चलाए से चलते रहेंगे? क्या ये विभाजन तत्व आपको समाप्त कर देंगे? नहीं–नहीं, आप सब आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे और आत्म साक्षात्कार प्राप्त करके अपने जीवन के मूल्य को समझ लेंगे।

समस्या ये है कि क्या आप अपना आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे, कि आपकी अन्तःस्थित शक्ति जाग्रित हो जाएगी? ये भली भांति आयोजित है। वास्तव में परमात्मा महान सृजनकार हैं। जिस प्रकार उन्होंने इसका सन्तुलन किया, जिस प्रकार ये कार्यान्वित होती है, ये सब प्रशंसनीय है। इसके लिए अत्यन्त सूक्ष्म रूप से कार्य किया गया। इस घटना का घटित हो जाना ही पर्याप्त नहीं है। आप इसे प्राप्त करें हम ये कह सकते हैं कि एक स्थान में घूमकर देखें, स्वयं देखें कि आप कितने सुन्दर हैं? परमात्मा ने कितनी सुन्दर चीजें बनाई हैं?

आप सब इसमें उन्नत हों। एक बार जब आप इसमें उन्नत होते हैं तब आपको महसूस होता है कि आप कितनी महान चीज हैं, कितने बहुमूल्य रत्न, कितने महान व्यक्ति, कितने प्रेममय, इतने महान कि आपका वर्णन ग्रन्थों में होना चाहिए। कोई भी ये जानने का प्रयत्न नहीं करता कि वह क्या कर रहा था और उसने किस प्रकार कार्य किया। तो आज हम ये अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। आत्मा का ये अनुभव, ये अत्यन्त विशिष्ट चीज है। इस प्रकार इसे कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता था परन्तु आज इसे प्राप्त किया जा सकता है। तो क्यों न इस समय का लाभ उठा लें? कृपा करके इसके लिए तैयार हो जाएं। यही मुख्य चीज है। आप क्या बन गए, यही मुख्य बात है। और तब ये आपकी समस्या होगी मेरी नहीं कि आप इस मानव संस्कृति का क्या बनाते हैं। मैं तो केवल सहायता कर सकती हूँ, इसे कार्यान्वित कर सकती हूँ।

अतः मैं आप सबसे प्रार्थना करूंगी कि आप अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के लिए तैयार हो जाएं। अच्छी बात है। परन्तु जो लोग इसे नहीं पाना चाहते उन्हें विवश नहीं किया जा सकता। तो बेहतर होगा ऐसे लोग सभागार को छोड़कर अपने कार्यों को चले जाएं।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें

महा शिवरात्रि पूजा

पंढर पुर, 29.2.1984

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आधुनिक समय में कोई भी पवित्र स्थल कहलाने वाला स्थान अपवित्रतम स्थान बन जाता है। आजकल इतनी अव्यवस्थित दशा है। पत्थरों से निकलने वाले कोमल अंकुरण, जिसे बहुत सी बाधाओं का सामना करना होता है, जैसी मौलिक चीज़ को स्थापित करने का प्रयत्न जब हम कर रहे हैं तो हमें अपने मस्तिष्क दुरुस्त रखने होंगे और हर चीज़ के प्रति विवेकशील रहते हुए यह देखने का प्रयत्न करना होगा कि अपनी सूझ–बूझ और सबूरी के माध्यम से हम क्या हासिल कर सकते हैं। ऐसा करना बहुत आवश्यक है।

आज, मैं सोचती हूँ, हम सबके लिए अत्यन्त महान दिन है क्योंकि यह स्थान विराट का, श्री विट्ठल का, स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ पर श्री विट्ठल ने अपने एक भक्त बेटे को दर्शन दिए और जब उस भक्त ने उनसे कहा कि इस ईंट पर खड़े हो जाओ", तो श्री विट्ठल वहाँ खड़े हो गए। ऐसा कहा जाता है कि प्रतीक्षा में वे वहाँ खड़े रहे। कुछ लोग कहते हैं कि जो मूर्ति हम वहाँ देखते हैं वह इस रेत पर पृथ्वी माँ से प्रकट हुई और यह कहकर पुन्ड्रीकाक्ष उसे साथ ले गए कि जब मैं अपने माता पिताजी के साथ व्यस्त था तो यही (श्री विट्ठल) मुझे और मेरे माता पिताजी से मिलने आए थे। अतः ये उसी ईट पर खडे हुए हैं जो मैंने फेंकी थी।"

इस सारी कहानी को अत्यन्त विवेकशील तरीके से, सहज बुद्धि के साथ समझना चाहिए कि परमात्मा स्वयं सभी प्रकार के चमत्कार करने में सक्षम हैं। परमात्मा द्वारा सृजित हम लोग आज जो कुछ कर रहे हैं वह संसार की सौ वर्ष पहले की स्थितियों को देखते हुए चमत्कार प्रतीत होता है। हम कह सकते हैं कि आज हम ऐसी बहुत सी चीज़ें देख रहे हैं जो चमत्कारी हैं। सौ वर्ष पहले कोई भी न सोच पाता कि इतनी दूर दूराज के स्थान पर भी यह सब प्रबन्ध किए जा सकते हैं। ये सारे चमत्कार परमात्मा की शक्ति से हो रहे हैं। तो हम लोग उन दैवी चमत्कारों का बहुत छोटे स्तर पर सृजन कर सकते हैं। परमात्मा के चमत्कारों की व्याख्या नहीं की जा सकती और न ही इनकी व्याख्या करनी चाहिए। ये चमत्कार हमारी बुद्धि से परे हैं और परमात्मा की उपस्थिति के विषय में लोगों को विश्वस्त कराने के लिए परमात्मा कुछ भी कर सकते हैं।

परमात्मा तीनों आयामों (Three Dimension) में चल सकते हैं और चौथे आयाम में भी तथा अपनी इच्छानुसार कुछ भी कर सकते हैं अपने रोज़मर्रा के जीवन में आप यही देखते हैं कि आप सब के साथ कितने चमत्कार घटित होते हैं! आप समझ भी नहीं पाते कि यह सब किस प्रकार

घटित होता है! उन चीज़ों पर भी चमत्कार होते हैं जो जीवन्त नहीं हैं और लोग आश्चर्य चकित रह जाते हैं कि यह सब किस प्रकार घटित होता है। अपनी आँखों से यह सब देखने के पश्चात् हमें विश्वास करना होगा कि वे परमात्मा हैं।

परमात्मा अपनी इच्छानुसार सभी कुछ कर सकते हैं और हम कुछ भी नहीं है। हम कुछ भी नहीं है। इसके विषय में, परमात्मा के चमत्कारों को समझने के विषय में कोई तर्क नहीं होना चाहिए। "तर्क किस प्रकार हो सकता है? किस प्रकार तर्क हो सकता है?" इस बात का आप वर्णन नहीं कर सकते। केवल तभी आप विश्वस्त हो सकते हैं जब आप ऐसी बौद्धिक अवस्था को प्राप्त कर लें जिसमें आप अपने अनुभव के माध्यम से विश्वास कर सकें कि परमात्मा सर्वशक्तिमान हैं। ये धारणा बहुत कठिन है। यह बहुत कठिन है क्योंकि हम लोग सीमित हैं, हमारी शक्तियाँ सीमित हैं। ये बात हम समझ नहीं पाते कि किस प्रकार परमात्मा सर्वशक्तिमान हो सकते हैं क्योंकि हमारे अन्दर वह क्षमता नहीं है। परमात्मा हमारे सृष्टा हैं, परमात्मा हमारे रक्षक हैं, उन्ही की इच्छा है कि हमारा अस्तित्व बना रहे। सर्वशक्तिमान परमात्मा ही हमारा अस्तित्व हैं, सर्वशक्तिमान। वो जो चाहें आपके साथ कर सकते हैं, वो इस विश्व को नष्ट कर सकते हैं और दूसरे विश्व का सृजन कर सकते हैं। उनकी इच्छा मात्र से सब कुछ हो जाता है।

पंढरपुर शिव पूजा के लिए आने का विचार इसलिए था कि श्री शिव आत्मा का प्रतीक हैं। आत्मा का निवास आप सबमें आपके हृदयों में है। सदा शिव का स्थान आपके सिर के तालू भाग में है परन्तु आत्मा आपके हृदय में प्रतिबिम्बित है।श्री विट्ठल आपके मस्तिष्क हैं, अतः आत्मा को मस्तिष्क में लाने का अर्थ मस्तिष्क को ज्योतिर्मय करना है। "आपके मस्तिष्क का ज्योतिर्मय होना अर्थात परमात्मा को महसूस करने की आपके मस्तिष्क की सीमित क्षमता को असीम बनाना।" मैं 'समझना' (Understand) शब्द उपयोग नहीं करूंगी, परमात्मा को महसूस करना।" वो कितने शक्तिशाली हैं, कितने चमत्कार करने वाले हैं, कितने महान हैं? दूसरी बात ये है कि मानव मस्तिष्क मृत चीज़ों से ही सृजन करता है परन्तु जब आत्मा मस्तिष्क को ज्योतिर्मय करती है तब आप जीवन्त चीज़ों का सृजन करते हैं, कुण्डलिनी का जीवन्त कार्य करते हैं। यहाँ तक कि मृत भी जीवित की तरह से बर्ताव करने लगते हैं क्योंकि आप मृत की आत्मा को छू लेते हैं।'

परमाणु (Atom) या अणु (Molecules) में अन्तःस्थित नाभिक (Nucleus) में अणु की आत्मा होती है। आप यदि अपनी आत्मा बन जाते हैं तो हम कह सकते हैं कि अणु या परमाणु का मस्तिष्क नाभिक (Nucleus) की तरह से है परन्तु नाभिक (Nucleus) का आत्मा नियंत्रण करती है, नाभिक के अन्दर निवास करने वाली आत्मा।

तो अब आपके पास चित्त (Attention) या शरीर – परमाणु का पूर्ण शरीर है। इसके बाद नाभिक है और नाभिक के अन्दर आत्मा है।

इसी प्रकार हमारा ये शरीर है और शरीर के अन्दर चित्त है। इसके साथ–साथ एक नाभिक है जो कि मस्तिष्क है। आत्मा हृदय में है इसलिए मस्तिष्क का नियंत्रण आत्मा के माध्यम से होता है। कैसे? हृदय के इर्द–गिर्द सात परिमल (Auras) हैं जिनका गुणन किसी भी संख्या तक होता है। सात को यदि 16000 बार गुणा किया जाए तो इतनी शक्तियाँ हमारे सातों चक्रों को देखती हैं – 7 के 16000 गुणनफल (7 raised to Power 16000-7^{16000})।

इस परिमल के माध्यम से आत्मा देख रही है–देख रही है। मैं फिर कह रही हूँ कि परिमल के माध्यम से आत्मा देख रही है। ये परिमल आपके मस्तिष्क में आपके सातों चक्रों के आचरण को देख रहा है। यह आपके मस्तिष्क में कार्यरत सभी नाड़ियों को भी देख रहा है। पुनः देख रहा है। परन्तु जब आप आत्मा को अपने मस्तिष्क में लाते हैं तो आप दो कदम आगे बढ़ जाते हैं क्योंकि जब आपकी कुण्डलिनी उठती है तो वह श्री सदाशिव को छू लेती है और सदाशिव आत्मा को सूचित करते हैं, सूचित करते हैं अर्थात आत्मा में प्रतिबिम्बित होते हैं। तो ये पहली अवस्था है जिसमें साक्षी परिमल (Auras) आपके मस्तिष्क में स्थित भिन्न चक्रों के सम्पर्क में आ जाता है और इसे समग्र करने लगता है।

परन्तु जब आप अपनी आत्मा को मस्तिष्क में लाते हैं तो ये दूसरी अवस्था होती है – ये दूसरी अवस्था है – तब आप वास्तव में आत्मसाक्षात्कारी बन जाते हैं, पूर्ण रूपेण, पूर्ण रूपेण, क्योंकि तब आपकी आत्मा ही आपका मस्तिष्क बन जाती है। यह क्रिया अत्यन्त गतिशील (Dynamic) है। तब यह मानव के पाँचवे आयाम (Fifth Dimension) को खोलती है।

प्रथम स्थान पर जब आप साक्षात्कारी बनते हैं, सामूहिक चेतना में आते हैं और कुण्डलिनी उठाने लगते हैं तो आप चौथे आयाम को पार करते हैं। परन्तु आपकी आत्मा जब मस्तिष्क में आती है तो आप पाँच आयामों के हो जाते हैं अर्थात आप कर्त्ता बन जाते हैं। उदाहरण के रूप में, हमारा मस्तिष्क कहता है, "ठीक है, इस चीज़ को उठा लो।" तब आप उस वस्तु को अपने हाथों से पकड़कर ऊपर उठा लेते हैं। तब आप कर्त्ता हैं। परन्तु जब आपका मस्तिष्क आत्मा बन जाता है तो आत्मा ही कर्त्ता है।

आत्मा जब कर्त्ता बन जाती है तो आप पूर्ण शिव बन जाते हैं: आत्मसाक्षात्कारी। उस अवस्था में यदि आपको क्रोध आ जाए तब भी आप उससे लिप्त नहीं होते। आप ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो पूर्णतः निर्लिप्त है। आपके पास यदि कुछ भौतिक पदार्थ हो तो भी आप उनसे लिप्त नहीं होते लिप्त

नहीं हो सकते क्योंकि आत्मा तो निर्लिप्तता– पूर्ण निर्लिप्तता है। किसी भी प्रकार की लिप्सा आपको परेशान नहीं कर सकती, क्षण भर के लिए भी आप लिप्त नहीं होते।

अब मैं कहूँगी कि आत्मा की निर्लिप्तता को समझने के लिए हमें स्वय का भली–भांति अध्ययन करना होगा, स्पष्ट रूप से – "किस प्रकार हम लिप्त हैं?" पहले स्थान पर अपने मस्तिष्क द्वारा हम लिप्त हैं। अधिकतर अपने मस्तिष्क द्वारा क्योंकि हमारा सारा अहं और बन्धन (Ego and Conditionings) हमारे मस्तिष्क में हैं। अतः भावनात्मक लिप्तता मस्तिष्क के माध्यम से है और हमारी सभी अहंवादी लिप्तताएं भी हमारे मस्तिष्क के माध्यम से हैं। इसलिए कहा गया है कि आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् साक्षी भाव अपना कर शिव तत्व का अभ्यास करने का प्रयत्न करना चाहिए।

अब किस प्रकार आप ये साक्षी भाव (Detachment) अपनाएं? क्योंकि किसी भी चीज से यद्यपि हम मस्तिष्क के माध्यम से लिप्त होते हैं परन्तु वास्तव में यह लिप्तता चित्त (Attention) के माध्यम से होती है। अतः हम 'चित्त निरोध' करने का प्रयत्न करते हैं। अर्थात अपने चित्त को नियंत्रित करने का प्रयास। "यह कहाँ जा रहा है?" सहजयोग में यदि आपको ऊँचा उठना है तो आपको अपना यन्त्र सुधारना होगा, किसी अन्य का यन्त्र नहीं। ये बात व्यक्ति को निश्चित रूप से जान लेनी चाहिए।

अपने चित्त को देखें कि यह कहाँ जा रहा है। स्वयं को देखें ज्यों ही आप स्वयं को देखने लगते हैं, अपने चित्त को देखने लगते हैं, आप अपनी आत्मा से एकरूप हो जाएंगे, क्योंकि आपने यदि अपने चित्त को देखना है तो आपको आत्मा बनना होगा। आत्मा बने बिना किस प्रकार आप चित्त को देख पाएंगे?

तो आप देखें कि आपका चित्त कहाँ जा रहा है। स्थूल रूप से सर्वप्रथम आपकी लिप्तता आपके शरीर से होती है। हम देखते हैं कि शिव को अपने शरीर से बिल्कुल मोह नहीं है। वो कहीं भी सो जाते हैं, श्मशान घाट में जाकर वो सो जाते हैं क्योंकि वो लिप्त नहीं हैं, उन्हें कोई भूत आदि नहीं पकड़ सकता। ऐसा कुछ भी नहीं हो सकता। वे निर्लिप्त हैं। आपको अपनी लिप्तताओं के माध्यम से निर्लिप्तता को देखना चाहिए।

अब क्योंकि आप आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति हैं, अभी आत्मा नहीं बने – अभी तक ये आपके मस्तिष्क में नहीं आई परन्तु अब भी आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं। तो अब कम से कम आप अपने चित्त को तो देख सकते हैं। ये कार्य आप कर सकते हैं। ये कार्य आप कर सकते हैं। अत्यन्त स्पष्ट रूप से आप अपने चित्त को देख सकते हैं: ये देखने से कि आपका चित्त कहाँ जा रहा है और तब आप इसका नियंत्रण भी कर सकते हैं। यह अत्यन्त साधारण बात है। अपने चित्त को नियंत्रित करने के लिए

आपको अपना चित्त 'इस' से 'उस' तक ले जाना होगा। अपनी प्राथमिकताओं को बदलने का प्रयत्न करें यह सब कार्य 'अभी' करने हैं – आत्मसाक्षात्कार के पश्चात पूर्ण निर्लिप्तता।

शरीर सुख माँगता है, शरीर को थोडा सा दुख देने का प्रयत्न करें। ये प्रयत्न करें। जिस चीज़ को आप सुखकर समझते हैं उसे थोड़ा सा कष्टदायी बनाने का प्रयत्न करें। इसी कारण से लोग हिमालय पर जाया करते थे। देखिए इस स्थान पर आने के लिए ही हमारे सम्मुख बहुत सी समस्या आई। अब आप हिमालय पर जाने की कल्पना कीजिए। तो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् वे अपने शरीर को हिमालय ले जाया करते थे, "ठीक है उन स्थितियों में रहो। देखें तुम किस प्रकार चलते हो।" तो अब तपस्या का आरम्भ होता है। एक प्रकार ये तपस्या है जिसे आप अत्यन्त सुगमता से कर सकते हैं क्योंकि अब आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं। आनन्द पूर्वक इस शरीर को थोड़ा सा कष्ट देने का प्रयत्न करें। श्री शिव को इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वे श्मशान घाट पर हैं, कैलाश पर या कहीं अन्य। आपका चित्त कहाँ है? आप देखें कि आपका मानवीय चित्त बहुत ही खराब है, अत्यन्त लिप्त और बेवकूफी भरा। "हमने ये कार्य इसलिए किया क्योंकि——" एक बहाना तैयार है या दूसरा। किसी बहाने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई बहाना न तो दिया जाना चाहिए, न स्वीकार होना चाहिए और न पूछा जाना चाहिए। बिल्कुल कोई बहाना नहीं। बहानों के बिना जीवित रहना सर्वोत्तम मार्ग है। सामान्य हिन्दी भाषा में कहा है कि "जाही विधि राखे ताही विधि रहिए।" जिस भी हालात में आप मुझे रखेंगे मैं उसमें रहूंगा और उसका आनन्द लूंगा। कबीर ने अपनी कविता में लिखा है कि "यदि आप मुझे हाथी की सवारी कराएंगे अर्थात शाही सवारी, तो मैं उससे जाऊंगा, आप यदि मुझे पैदल चलाएंगे तो मैं पैदल चलूंगा। जाही विधि राखे ताहि विधि रहिए।" अतः मामले में किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए–कोई प्रतिक्रिया नहीं। प्रथम कोई बहाना नहीं और कोई प्रतिक्रिया नहीं।

अब दूसरे स्थान पर भोजन है, पशु रूप में मानव की यह पहली इच्छा है। भोजन पर बिल्कुल चित्त नहीं होना चाहिए। भोजन में नमक हो या न हो, जैसा भी भोजन हो इस पर चित्त नहीं दिया जाना चाहिए। वास्तव में आपको ये भी याद नहीं होना चाहिए आज सुबह आपने क्या खाया। परन्तु हम तो ये सोचते हैं कि आने वाले कल हम क्या खाएंगे। हम लोग शरीर को चलाने के लिए भोजन नहीं करते उससे कहीं अधिक जिह्वा के स्वाद की सन्तुष्टि करने के लिए करते हैं आप ये समझ लें कि यह सुख स्थूल चित्त की निशानी है। किसी भी प्रकार का सुख अत्यन्त स्थूल इन्द्रियार्थवाद होता है, इन्द्रियों का सुख। यह बहुत स्थूल है।

परन्तु जब मैं कहती हूँ कि सुखों में नहीं फँसना है तो इसका ये अर्थ नहीं है कि आप सब लोग इतने गम्भीर स्वभाव के हो जाएं कि मानो आपके परिवार में किसी की मृत्यु हो गई हो। इसके स्थान पर आपको शिव सम होना होगा–अत्यन्त निर्लिप्त।

विवाह के लिए वे बहुत तेज दौड़ने वाले बैल पर सवार होकर आए। वे बैल पर सवार थे और उनके दोनों पैर इस प्रकार से लटके हुए थे। तेज़ दौड़ता हुआ बैल और उसे सम्भालते हुए अपनी टाँगों को लटकाए श्री शिव! और जा रहे हैं विवाह करने के लिए! और उनके बाराती, किसी की एक आँख है किसी का नाक नहीं है! सभी प्रकार के अजीबो गरीब लोग उनके साथ आ रहे हैं और उनकी पत्नी शिव के विषय में लोगों की ऊल जलूल बातें सुनकर व्याकुल हैं! उन्हें बिल्कुल चिन्ता नहीं है कि उनकी क्या इज्ज़त होगी आदि आदि। परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि आप हिप्पी बन जाएं। ये बहुत बड़ी समस्या है कि एक बार जब आप इस प्रकार सोचने लगते हैं तो आप हिप्पी बन जाते हैं।

बहुत से लोगों का ये मानना है कि शिव की तरह से आचरण करने से व्यक्ति शिव बन जाता है। बहुत से लोग इस प्रकार से सोचते हैं कि यदि व्यक्ति गांजा पीना शुरू कर दे तो वह शिव बन जाएगा क्योंकि श्री शिव गांजा पिया करते थे। शिव तो गांजा इसलिए पीते थे ताकि इस ज़हर को वो विश्व से समाप्त कर दें उन्हें क्या फर्क पड़ता है चाहे ये गांजा हो या कुछ और! कभी उन्हें नशा नहीं चढ़ेगा, नशे का कोई प्रश्न ही नहीं है। शिव सभी कुछ भस्मीभूत कर देते हैं। लोग ये भी सोचते हैं कि शिव की तरह से यदि वे किसी भी चीज़ की चिन्ता नहीं करेंगे तो वे शिव बन जाएंगे। शिव को दिखावे की क्या आवश्यकता है? उन्हें दिखावा करने की क्या ज़रूरत है? जो भी कुछ वे पहनते हैं वही उनका सौन्दर्य है, उन्हें कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है।

अतः किसी भी चीज़ के साथ लिप्सा भद्दापन है। ये भद्दापन है, बेवकूफी है। परन्तु आप जैसे चाहें वस्त्र पहन सकते हैं। यदि आप सर्वसाधारण वस्त्र पहनेंगे तो भी अत्यन्त गरिमामय व्यक्ति प्रतीत होंगे। परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए कि आप कहें कि, "ठीक है, इस परिस्थिति में हम शरीर पर एक चादर ही लपेट लेते हैं।"

आत्मा के माध्यम से आपमें जो सौन्दर्य विकसित हो गया है। वह आपको शक्ति देता है कि आप जो चाहे पहनें इससे आपके सौन्दर्य पर कोई अन्तर न होगा। आपका सौन्दर्य तो सदैव विद्यमान है।

परन्तु क्या आपने वह अवस्था प्राप्त कर ली है? वह अवस्था आपको केवल तभी प्राप्त होती है जब आपकी आत्मा आपके मस्तिष्क में प्रवेश करती है। अहंवादी लोगों में ऐसा होना अधिक कठिन है। यही कारण है कि वे आनन्द नहीं ले सकते। जरा सा बहाना मिलते ही वे लड़खड़ा जाते हैं और

आत्मा जो कि आनन्द का स्रोत है, नहीं आती, प्रकट नहीं होती। आनन्द तो सौन्दर्य है। आनन्द ही सौन्दर्य है परन्तु यह एक अवस्था है जिसे व्यक्ति ने प्राप्त करना है।

लिप्साएं भिन्न तरीकों से आती हैं। आप इनमें उतरते चले जाए तो आपको अपने परिवार से मोह हो जाता है। मेरे बच्चे का क्या होगा? मेरे पति का क्या होगा? मेरी मां, मेरी पत्नी तथा सभी मूर्खताओं का क्या होगा?

कौन आपकी माँ है और कौन आपका पिता? कौन आपका पति है और कौन आपकी पत्नी है? श्री शिव तो ये सारी चीजें नहीं जानते। उनके लिए तो वे और उनकी शक्तियां अविच्छेदय (inseparable) हैं। तो वे अद्वैत व्यक्तित्व पर खड़े हुए हैं, उनमें कोई द्वैतवाद नहीं। जब द्विविधता (Duality) होती है तब आप कहते हैं मेरी पत्नी, मेरा नाक, मेरे कान, मेरे हाथ, मेरा, मेरा मेरा और इस प्रकार आप अधोगति की ओर बढ़ते जाते है।

जब तक हम मेरा कहते हैं तब तक द्विविधता शेष होती है। परन्तु जब मैं कहती हूं, "मैं, ये नाक"–तब द्विविधता नहीं होती। शिव ही शक्ति, शक्ति ही शिव। इसमें द्विविधता नहीं है। परन्तु सदैव हम अपनी द्विविधता में रहते हैं, इसके कारण लिप्तता बनी रहती है। द्विविधता यदि न हो तो लिप्तता क्या है? आप यदि प्रकाश हैं और आप ही दीपक हैं तो द्विविधता कहाँ है? आप ही यदि चांद है आप ही चाँदनी है तो द्विविधता कहाँ है? आप ही सूर्य हैं और आप ही धूप है, आप ही शब्द हैं आप ही अर्थ हैं तो द्विविधता कहाँ है?

परन्तु जब पृथक्कीकरण (Separation) होता है तब द्विविधता होती है। पृथक होने के कारण आपमें लिप्सा भाव आ जाता है क्योंकि आप यदि वही हैं तो आप लिप्त किस प्रकार होंगे? इस बात को क्या आप समझ पाए? 'आपमें' और 'आपके' में यदि अन्तर है और दूरी है तभी आप लिप्त होते है। परन्तु यह 'मैं' हूँ–दूसरा कौन है? पूरा ब्रह्माण्ड 'मैं' ही हूं अन्य कौन है? सभी कुछ मैं हूँ, दूसरा कौन है?

यह मस्तिष्क तरंग नहीं है और न ही यह अहं लहरी है। दूसरा कौन है? कोई नही।

ये तभी सम्भव है जब आपकी आत्मा आपके मस्तिष्क में आ जाती है और आप विराट के अंग प्रत्यंग बन जाते हैं। जैसा मैंने आपको बताया विराट ही मस्तिष्क है। तब यदि आप अपना गुस्सा प्रकट करते हैं, अपना स्नेह प्रकट करते हैं, करुणा प्रकट करते हैं या कुछ अन्य, तो आपकी आत्मा ही यह सब अभिव्यक्ति करती है क्योंकि मस्तिष्क का तो अस्तित्व ही खत्म हो गया है। अब यह "सीमित" मस्तिष्क, असीम आत्मा बन गया है।

मैं नहीं जानती, मैं वास्तव में नहीं जानती कि इस प्रकार सोचने के लिए क्या उपमा दूँ। परन्तु हम इसे इस प्रकार समझ सकते है कि समुद्र पर यदि हम कोई रंग डालें तो

उसका जल रंगीन हो जाना सम्भव नहीं है। समझने का प्रयत्न करें कि कुछ थोडा सा रंग यदि समुद्र पर डाल दिया जाए तो रंग का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इसी बात को दूसरी तरह समझें। समुद्र का जल यदि रंगीन हो और इस जल को वातावरण में डाल दिया जाए या किसी चीज़ पर डाल दिया जाए, किसी भी वस्तु पर डाल दिया जाए, तो यह सब रंगीन हो जाता है।

आत्मा उस सागर की तरह से है जिसमें प्रकाश है और जब ये सागर मस्तिष्क रूपी नन्हे से प्याले में उतरता है तो प्याले का अस्तित्व समाप्त हो जाता है और सभी कुछ आध्यात्मिक बन जाता है। सभी कुछ! आप हर चीज को आध्यात्मिक बना सकते हैं, किसी भी चीज को आध्यात्मिक बना सकते हैं। किसी भी चीज को यदि आप छू दें तो वह आध्यात्मिक हो जाती है। रेत आध्यात्मिक हो जाती है, पृथ्वी आध्यात्मिक हो जाती है, वातावरण आध्यात्मिक हो जाता है। दिव्य पदार्थ आध्यात्मिक हो जाते हैं, हर चीज आध्यात्मिक' हो जाती है।

अतः आत्मा सागर (असीम) है और आपका मस्तिष्क सीमित है।

आपके सीमित मस्तिष्क की लिप्तता को आत्मा रूपी सागर के दायरे में लाना आवश्यक है। मस्तिष्क की सारी सीमाएं टूट जानी चाहिएं ताकि जब वह सागर मस्तिष्क को भरे तो यह उस छोटे प्याले को पूरी तरह से तोड़ दे और यह प्याला रंगमय हो जाए। पूरा वातारण, हर चीज़, जिसे भी आप देखें वह रंगीन हो जानी चाहिए।

यही कारण है कि आज मैंने शिवतत्व को मस्तिष्क में लाने का प्रयत्न किया।

मस्तिष्क में शिव तत्व को लाने के लिए पहला तरीका ये है कि आप मस्तिष्क से कहें "श्रीमान मस्तिष्क आप कहाँ जा रहे हैं। आपका ध्यान इस चीज पर जा रहा है उस चीज पर जा रहा है और आप इनमें उलझ रहे है। अब स्वय को निर्लिप्त करें और स्वय मस्तिष्क बन जाए, निर्लिप्त हो जाए, निर्लिप्त हो जाए।"

तब आत्मा के रंग से पूरी तरह से भरे हुए निर्लिप्त मस्तिष्क को लें। यह स्वतः ही घटित होगा। जब तक आपके चित्त के साथ ये सीमाएं बनी रहेंगी ये घटित न होगा। अतः सभी साधकों को स्वयं सोच समझकर ये तपस्या करनी होगी।

मैं आपके साथ हूँ। अब आपको इस प्रकार से कोई पूजाएं करने की आवश्यकता नहीं हैं। परन्तु अब आपको वह अवस्था प्राप्त करनी है और इसके लिए पूजा की आवश्यकता है। मुझे आशा है कि आपमें से बहुत से लोग मेरे जीवन काल में ही शिवतत्व बन जाएंगे। परन्तु ये न समझें कि मैं आपको कष्ट उठाने को कह रही हूँ। इस प्रकार के उत्थान में कोई कष्ट नहीं उठाना पडता। आप यदि इसे समझे तो ये अत्यन्त आनन्द की अवस्था है। यही समय होता है जब आप निरानन्द बन जाते हैं। सहस्रार में

इसी आनन्द का नाम बताया गया है। यह नाम 'निरानन्द' है। और आप जानते है कि आपकी माँ का नाम भी निरा है, आप निरानन्द हो जाते हैं।

तो आज की शिव पूजा का विशेष अर्थ है। मुझे आशा है कि बाह्य में, स्थूल ढंग से हम जो कुछ भी करेंगे वह सूक्ष्म रूप से घटित होगा।

मै आपकी आत्मा को आपके मस्तिष्क में लाने का प्रयत्न कर रही हूँ, परन्तु कभी कभी मुझे ये कार्य कठिन लगता है क्योंकि अभी भी आपका चित्त उलझा हुआ है।

स्वयं को निर्लिप्त करने का प्रयत्न करें। क्रोध, वासना, लोभ सभी विकारों को कम करने का प्रयत्न करें। जैसे खाने के बारे में मैंने डा. वारेन से कहा, "इनसे कहें कि कम खाया करें, पेटुओं की तरह से न खाएं। कभी–कभी किसी प्रीति भोज में चाहे आप ज्यादा खा लें परन्तु सदैव ऐसा न करें। ये सहजयोगी की निशानी नहीं है। नियंत्रण करने का प्रयत्न करें।

अपनी वाणी पर नियंत्रण करने का प्रयत्न करें। आप अपने क्रोध की अभिव्यक्ति कर रहे हो या करूणा की, या करूणामय होने का दिखावा कर रहे हैं? नियंत्रण करने का प्रयत्न करें।

मैं जानती हूँ कि आपमें से कुछ लोग बहुत अधिक न कर सकेंगे ये ठीक है। मैं बार–बार आपको बताने का प्रयत्न करूंगी, आपकी सहायता करने का प्रयत्न करूंगी और आपमें से अधिकतर ऐसा कर सकते हैं। अतः इसके लिए प्रयत्न करें।

तो आज से हम गहनतर स्तर पर सहजयोग आरम्भ करते हैं। हो सकता है आपमें से कुछ इस स्तर को प्राप्त न कर पाएं। परन्तु आप सबको गहनता में जाने का प्रयत्न करना चाहिए। हर एक को। ऐसा करने के लिए न तो वैभवशाली व्यक्तियों की आवश्यकता है और न ही बहुत पढ़े लिखों की। नहीं बिल्कुल भी नहीं।

जो लोग ध्यान धारणा करते हैं, समर्पित हैं, वही गहनता में उतरते हैं क्योंकि वो पहली जड़ों की तरह से होते हैं जो अन्य लोगों के लिए बहुत गहराई में जाती हैं ताकि अन्य लोगों के लिए भी मार्ग बन सके।

आज की पूजा में हम संक्षिप्त गणेश अथर्वशीर्ष पढ़ेंगे, मेरे चरण आदि को बहुत ज्यादा नहीं धोना है। केवल अथर्वशीर्ष करना है।

शिव हर वक्त स्वच्छ, निर्मल एवं निष्पाप होते हैं, तो निष्कलंक को आप क्यों धोएंगे।

आप कह सकते हैं कि "श्रीमाताजी आपके चरण कमलों को धोते हुए जल में आपका चैतन्य आ जाता है।" परन्तु ये इतने निर्लिप्त हैं कि इन्हें धोने की कोई आवश्यकता नहीं। विशेष रूप से उस अवस्था में जब आप पूरी तरह से धुल जाते हैं, पूरी तरह से स्वच्छ हो जाते हैं।

इसके बाद आप देवी पूजन करेंगे। क्योंकि देवी जो कि कुमारी हैं उनकी पूजा होनी

चाहिए। हम गौरी के 108 नाम लेंगे। तत्पश्चात् हम शिव की पूजा करेंगे।

मुझे खेद है कि एक ही प्रवचन में मैं आपको सब कुछ नहीं बता पाऊंगी। परन्तु आपके आत्मसाक्षात्कार में आपकी निर्लिप्तता अवश्य अभिव्यक्त होनी चाहिए। निर्लिप्तता। समर्पण क्या है? ये कुछ नहीं है, जब आप निर्लिप्त होते हैं तो स्वतः ही समर्पित होते हैं। अन्य चीज़ों से जब आप चिपके होते हैं तब आप बिल्कुल भी समर्पित नहीं होते।

मेरे प्रति समर्पित होना क्या है? मैं तो इतनी निर्लिप्त व्यक्ति हूँ कि ये सब मेरी समझ में ही नहीं आता! मैंने आपसे क्या निकालना है? मैं इतनी निर्लिप्त हूँ, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

आज हम सब लोग प्रार्थना करेंगे कि, "हे परमात्मा हमें शक्ति दो और आकर्षण का वह स्रोत दो जिससे हम अन्य सभी आकर्षण, अन्य सभी सुख, अहं के सभी आनन्द आदि त्याग दें और शिव तत्व के निरानन्द तत्व में पूरी तरह से उतर जाएं।"

मुझे आशा है कि मैं आपको बता पाई हूँ कि आज मैं यहाँ क्यों आई और आज का दिन इतना महान क्यों है। यहाँ उपस्थित आप सब लोग भाग्यशाली हैं। आपको सोचना चाहिए कि परमात्मा आप पर बहुत दयालु हैं। उन्होंने आपको यहाँ उपस्थित होने के लिए और यह सब सुनने के लिए चुना है। एक बार जब आप निर्लिप्त हो जाएंगे तो आपमें जिम्मेदारी का भाव आ जाएगा। आप अभिव्यक्त– ज़िम्मेदार हो जाएंगे। यह ज़िम्मेदारी आपको अहं नहीं देगी। यह ज़िम्मेदारी स्वयं को पूर्ण करेगी। ये स्वयं की अभिव्यक्ति करेगी और स्वतः प्रकट होगी।

परमात्मा आपको धन्य करें।

शक्ति देवी पूजा

मॉस्को, 17.9.95

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

मुझे खेद है कि आज आने में देर हुई परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपने परस्पर संगत का आनन्द लिया होगा और सामूहिकता का आनन्द तो अत्यन्त महान होता है। एक बार ऐसा हुआ कि मुझे कहीं जाना था और वायुयान के आने में विलम्ब हुआ। मुझे चिन्ता हुई कि मैं देर से पहुँचूंगी परन्तु वायुयान समय से सात घण्टे देर से आया और दिल्ली के सभी सहजयोगी जो मुझे लेने वायुपत्तन आए थे वो वहाँ मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। जब मैं वहाँ पहुँची तो वे सब इतने तरोताजा और अच्छे दिखाई दे रहे थे कि, मैं हैरान हूँ, मैंने उनसे पूछा कि क्या आप घर वापिस चले गए थे? कहने लगे नहीं नहीं आपकी प्रतीक्षा में हम पूरी रात वायुपत्तन पर गा रहे थे, नाच रहे थे और आनन्द ले रहे थे। सहजयोग की विशेषता है कि हम हर क्षण का आनन्द ले सकते हैं। अपने हित के लिए आनन्द ले सकते हैं। पश्चिमी देशों, विशेष रूप से अमरीका, में आधुनिक धारणा ये है कि हमें अपने जीवन के हर क्षण का आनन्द लेना चाहिए परन्तु वास्तव में जिन चीजों को ये आनन्द की संज्ञा देते हैं वे सब आत्मघातक हैं। मद्यपान या द्वन्द युद्ध आदि निराशाजनक कार्य जो ये करते हैं वो नहीं किए जाने चाहिएं। ऐसे कार्यों से इनकी सामूहिकता बहुत भयानक हो जाती है कि ये तस्करी और हत्याएं करने लगते हैं। स्वयं को तथा राष्ट्र को हानि पहुँचाने वाले कार्य करने के लिए ये एकत्र हो जाते हैं। सहजयोगियों को तो इस प्रकार के आनन्द का ज्ञान ही नहीं है। जब वे सामूहिकता में होते हैं तो उनका हर क्षण आनन्द से परिपूर्ण होता है। कल जब आप लोग वायुपत्तन पर एकत्र हुए तो मैं ये बात देख पाई। आप लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे और जब मैं पहुँची तो मैंने देखा कि किस प्रकार आपके चेहरे आनन्द से चमक रहे हैं।

आज हमने देवी की पूजा करने का निर्णय किया है। देवी की पूजा जिनके बहुत से रूप हैं। बार–बार मानव की आसुरी शक्तियों से रक्षा करने के लिए तथा उन्हें सुरक्षा भाव प्रदान करने के लिए देवी अवतरित हुई। परन्तु मैं नहीं सोचती कि किसी भी अवतरण में उन्होंने आत्मसाक्षात्कार का कार्य किया। ये अत्यन्त दिलचस्प और आनन्ददायी कार्य है। आसुरी लोगों से युद्ध करके अच्छे लोगों की रक्षा उन्हें करनी पड़ी क्योंकि असुरों के हाथों ये लोग अपनी अबोधिता और सहजता के कारण कष्ट उठा रहे थे। ये सब कुछ बहुत समय पूर्व घटित हुआ। आज बसन्त का विशेष समय है जिसमें आप सब लोग फल बन गए हैं। पृथ्वी पर बहुत से पुष्प थे। अब आप सब फल बन गए हैं। यह बात अत्यन्त उत्साहजनक है कि रूस और यूक्रेन में इतनी अधिक संख्या में लोग आध्यात्मिक

रूप से संवेदनशील हैं। आत्मसाक्षात्कारी होना आप सबके लिए बहुत बड़ा आशीष है। यह सारी सामूहिक घटना निश्चित रूप से पूरे विश्व के लिए महान उद्धारक साबित होगी।

हमारे देश में समस्याएं हैं। परन्तु अब मैं आप सब सहजयोगियों को बता रही हूँ कि जो भी शक्तियाँ आपको प्राप्त हुई हैं देवी की उन सब शक्तियों को आप आयोजित रूप से प्रतिपादित करें। सहजयोगी होना अत्यन्त आनन्दायी है परन्तु आप लोग तो सहजयोग को अग्नि की तरह तेजी से फैला रहे हैं क्योंकि ये दोनों देश आश्चर्यजनक रूप से आध्यात्मिकता के प्रति अत्यन्त संवेदनशील हैं। देवी की यह शक्ति जो आपने अपने अन्दर प्राप्त कर ली है इसे अब विवेकशील तरीके से प्रसारित किया जाना चाहिए। उदाहरण के रूप में एक बार जब मैं यहाँ आई तो आप लोग अत्यन्त कठिनाई से गुजर रहे थे और शायद मैंने उस स्थिति को संभाला भी था। परन्तु अब आप सब इस कार्य को संभाल सकते हैं और इस शक्ति को प्रतिपादित कर सकते हैं। अब मैं देखती हूँ कि यहाँ पर समस्या मुख्य रूप से आर्थिक है और आप लोग यदि अपने मस्तिष्क इस समस्या पर डालें तो आप इसका कारण जान जाएंगे। मेरे प्रति आपका जो समर्पण है वह अत्यन्त सन्तोषजनक है। मैं आपकी माँ हूँ और यूक्रेन के लोगों की भी माँ हूँ। परन्तु मैं रूस और पूरे यूक्रेन की भी माँ हूँ। मुझे तब प्रसन्नता होगी जब इस देश की और यूक्रेन की सारी समस्याओं का हल आप लोग निकाल लेंगे। इसके लिए आपको अपनी सरकार पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आपको बताती रही हूँ कि इस देश के पतन की ओर अग्रसर होने का कारण मैं समझ पाई हूँ। आपके ज्योतित विवेक के माध्यम से देवी की यह शक्ति, जो कि आपके अन्दर जागृत है, आपको पर्याप्त सूझ–बूझ प्रदान करेगी कि आप इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।

इस देश में पहली चीज़ जो मैंने देखी है वह ये है कि यहाँ के लोग समझते हैं कि पूरे पश्चिम में वैभव का प्राचुर्य है। पश्चिमी देश स्वर्ण से भरे हुए नहीं। जिस प्रकार आप लोग आनन्द से परिपूर्ण है वहाँ पर तो आनन्द का पूर्ण अभाव है। उन लोगों के चेहरे आपकी तरह से सुन्दर और सन्तोषमय नहीं हैं। आप यदि सूक्ष्मता से देखें तो उन्हें आर्थिक समस्याएं भी हैं। इस देश में इसलिए समस्या है कि यहाँ पर सभी चीज़ें विदेशों से आई हैं। इन वस्तुओं को भेजने वाले देशों में मन्दी का प्रकोप है। वहाँ पर कुछ बिकता नहीं है। ये सारा कबाड़ा और बेकार की चीज़े वे आपके देश में, यूक्रेन में, तथा पूर्वी ब्लाक के देशों को भेज रहे हैं। जो भी रूबल आपके पास थे वो सब आपने इन कचरा वस्तुओं को खरीदने पर बर्बाद कर दिए। मेरे देश में जब स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था तो महात्मा गांधी ने कहा हम कोई भी विदेशी चीज़ नहीं खरीदेंगे। उन्होंने

कहा हम यदि विदेशों से आई चीजों को न खरीदें तो हमारा उद्योग और हस्तशिल्प उन्नत होगा। महात्मा गाँधी ने हमारे देश की जीवन शैली को ही परिवर्तित कर दिया। सभी लोगों को भारत में बनी खादी पहनने के लिए प्रेरित किया गया। आज भी आप भारत के बाजारों में कोई भी आयायित चीज नहीं पा सकते। संघर्ष के दिनों में कोई यदि विदेशी चीजें अपनी दुकान पर बेचने का प्रयत्न करते तो विद्यार्थी व युवा कार्यकर्त्ता जाकर ऐसी दुकानों के सम्मुख खड़े हो जाते और कहते विदेशी चीज़ें मत बेचो। उस समय हम पर अंग्रेजों का शासन था। वे हमें गिरफ्तार करते परन्तु कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता। आयातित चीज़ों पर रोक लगा दी गई थी। आज भी हम बाजार में आयातित वस्तुएं नहीं खरीद सकते। निःसन्देह कुछ मूर्ख लोग हैं जो तस्करी द्वारा चीज़ें ले आते हैं और मूर्ख लोग पाश्चात्य संस्कृति अपनाने के लिए वो वस्तु खरीदना चाहते हैं। परन्तु ऐसे लोग बहुत कम हैं और उस देश में देवी की शक्ति के प्रभाव से ऐसे लोगों का पर्दाफाश हो रहा है। अतः अपने देश के प्रति आपका भी कर्तव्य है। पृथ्वी माँ ने आपको एक स्थान दिया है, जन्म दिया है। अतः आपको इस देश की मान मर्यादा और खुशहाली की रक्षा करनी चाहिए। मैं हैरान हूँ कि किस प्रकार अमरीकन तथा अन्य लोगों ने यहाँ पर कचरे की दुकाने खोल दी हैं और यहाँ के लोग अपने बहुमूल्य धन को इस कूड़े पर बर्बाद कर रहे हैं! एक बार यदि विदेशों से आने वाली इन सब चीज़ों का आना बन्द कर दें, इनका पूर्णत बहिष्कार कर दें तब, आप हैरान होंगे वे लोग यहाँ क्या करते हैं। वो सब परमात्मा के प्रेम की शक्ति के विरुद्ध हैं क्योंकि वे तो शोषण करना चाहते हैं। किसी से यदि आप प्यार करते हैं तो आप उसका शोषण नहीं कर सकते। ये चीज़े आपके देश के लिए हितकर नहीं हैं। पश्चिम के लोगों की शैली को यदि आप देखें तो आपको आघात पहुँचेगा। देवी द्वारा वरदान के रूप में दी गई सभी सुन्दर चीज़ों को उन्होंने नष्ट कर दिया है। जीवन के पावित्र्य का तथा आध्यात्मिकता का उन्हें कोई विवेक नहीं रहा। वे तो केवल पैसा–पैसा–पैसा जानते हैं। उनमें चरित्रविवेक का भी पूर्ण अभाव है।

सद्चरित्र के बिना किस प्रकार आप देवी को प्रसन्न कर सकते हैं? यदि आप सहजयोगी हैं तो आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि कौन सी चीज़ें देवी को प्रसन्न करती हैं। देवी को प्रसन्न किए बिना न तो आप प्रसन्न हो सकते हैं न ही कभी अच्छे सहजयोगी बन सकते हैं। इसके लिए आपमें ये समझने का विवेक होना आवश्यक है कि देवी किस प्रकार प्रसन्न होती हैं। सहजयोगियों के अतिरिक्त मेरे विचार में पश्चिम के आधे लोगों में भी उतना विवेक नहीं है जितना आपमें है। इसका कारण, निःसन्देह, ये है कि हर समय वो क्षणिक सुखों के विषय में सोचते

रहते हैं तथा चरित्रहीन जीवन शैली को अपना लेते हैं, उस शैली को जो देवी (Goddess) विरोधी है। ये लोग भयंकर असाध्य रोगों से पीडित हैं। अपने माँ–बाप को वे मार डालते हैं। अपने बच्चों की वे हत्या कर देते हैं। प्रेम का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। देवी की शक्ति तो प्रेम की शक्ति है। विश्व में उनके सभी कार्य, उनकी करुणा एवं प्रेम के माध्यम से होते हैं। देवी का पूर्ण शरीर, उनका पूर्ण अस्तित्व ही करुणा एवं प्रेम से बना हुआ है, किसी अन्य तत्व से नहीं। ये शक्ति वास्तविकता की सूझ–बूझ प्रदान करती है और व्यक्ति को अन्दर बाहर से ज्योतिर्मय भी करती है। उदाहरण के रूप में आपको यदि किसी व्यक्ति से प्रेम है तो आप उसके विषय में सब कुछ जान जाते हैं। इसका पैसे से कुछ नहीं लेना–देना। यह उच्चतम, बहुमूल्यतम एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण शक्ति है जो आपको प्राप्त हो गई है। जब कभी आप किसी उत्तम या हितकर कार्य के लिए सोचते हैं तो यह शक्ति आपके उस विचार में प्रवेश कर जाती है और तत्पश्चात् ये विचार पूरे ब्रह्माण्ड में, आपके देश में तथा लोगों में प्रसारित हो जाते हैं। इस प्रेम और करुणा का केवल एक लाभ है, सभी को आनन्दमय देखना बस। सच्चे शब्दों में आनन्द मग्न देखना। इस शक्ति को सामूहिकता की चिन्ता होती है तथा व्यक्ति की भी। यह पूरे विश्व की चिन्ता करती है और किसी देश विशेष की भी। इस आधुनिक काल में विश्व भर के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए ये शक्ति निरन्तर कार्यरत है। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि सभी देश आप जैसे नहीं हैं जिनमें अपनी देवी माँ का प्रेम महसूस करने के लिए हृदय हो। यह तो प्रेम एवं करुणा का सागर है जो सभी तटों को छू लेना चाहता है। ये चाहता है कि सभी के हृदय छू ले। परन्तु कुछ लोग तो पत्थर होते हैं। रूस के पास अत्यन्त विशाल हृदय है और यूक्रेन के पास भी। मेरी समझ में नहीं आता कि पूर्वी ब्लाक के देशों ने किस प्रकार इतना विशाल एवं उत्तम हृदय प्राप्त कर लिया! वो ज्यादा वैभवशाली नहीं है इस कारण से हमें उन्हें छोटा नहीं मान लेना चाहिए। जहाँ आप अपने बच्चों का और बच्चे अपने माँ बाप का विश्वास नहीं कर सकते वहाँ वैभव का क्या महत्व है? पैसे के लिए वे एक दूसरे की हत्या कर देते हैं। निःसन्देह वहाँ पर ऐसा प्रभाव है कि लोग किसी भी कीमत पर पैसा चाहते हैं।

आप लोग यदि ये निर्णय करें कि आप माफिया से डरेंगे नहीं और अपनी ध्यान धारणा के दौरान यदि आप ये माँगेंगे कि श्री माताजी ये माफिया समाप्त हो जाए तो मैं वचन देती हूँ कि ये माफिया समाप्त हो जाएगा, ये कार्य हो जाएगा। कल जिस प्रकार आपने मेरे अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की वैसे ही अपने देश के हित की याचना करें। ये आपके विचारों का विवेक हैं। आपकी विवेकशीलता इतनी तीव्र हो

जाएगी कि मैं इसे परम विवेक का नाम देती हूँ। इस विवेक के माध्यम से आप जड़ों तक देख पाएंगे और समस्या का समाधान कर लेंगे।

अतः सर्वप्रथम आपको देश भक्त बनना होगा। मैं ये बताना चाहूँगी कि जब मैं चीन गई तो ये देख कर हैरान हुई कि यद्यपि वो लोग साम्यवादी हैं फिर भी वो अत्यन्त देशभक्त हैं। वो अत्यन्त चरित्रवान भी हैं। मैंने पाया कि धन के मामले में वो इसलिए उन्नत हो गये हैं क्योंकि उनके यहाँ से जितने भी लोग विदेश जाते हैं वो अपना धन चीन भेजते हैं ताकि उनका देश विकसित हो सके। इस गोष्ठी के लिए जब मैं चीन गई तो मुझे हैरानी हुई कि किस प्रकार कार्यकर्त्ताओं ने, जो कि विद्यार्थी थे, अपनी सेवाएं निःशुल्क अर्पित कीं! वायुपत्तन पर वही लोग थे, होटलों में वही लोग थे, बाजारों में वही लोग थे, सर्वत्र वही लोग खड़े हुए थे और इस बात को देख रहे थे कि यह गोष्ठी सफल हो। यद्यपि चीन के लोग खाने के बहुत शौकीन हैं फिर भी इस गोष्ठी के दौरान वो लोग पूरा पूरा दिन खाना नहीं खाते थे। उदाहरण के रूप में वे मेरे प्रति बहुत विनम्र एवं करुणामय थे। जब हम बाहर गए तो पूरा दिन हम बाहर थे परन्तु ड्राइवर ने बिल्कुल इस बात की शिकायत नहीं की कि उसे खाना नहीं मिला, कुछ नहीं मिला। वे आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं परन्तु जब मैं बाहर जाने के लिए कार तक आई तो सब आकर अपना हाथ कार के दरवाजे पर रखते ताकि मुझे चोट न लगे। इतना ही नहीं उन्होंने सभी वृद्ध एवं अस्वस्थ लोगों, तथा जो लोग चल नहीं सकते थे, उनकी बहुत देखभाल की। उनकी कुर्सियों को वे चीन की महान दीवार तक ले गए। उन्होंने गोष्ठी में भाग लेने वाले लोगों की इतनी सहायता की कि मैंने दूरदर्शन पर देखा कि वापिस जाते हुए अमेरिका के लोग भी फूट–फूट कर रो रहे थे और पत्थर दिल अमेरिका के लोग भी कह रहे थे कि ये प्रेम हमें अपने देश में प्राप्त नहीं होता। यह सब अत्यन्त हृदयस्पर्शी था और इस आधुनिक काल में अत्यन्त स्पष्ट था। आज जब लोग इतने शुष्क स्वभाव और धन लोलुप हैं इन लोगों ने बिना कोई पैसा लिए सारा कार्य किया। किसी ने अगर इन्हें टिप देनी चाही तो इन्होंने स्वीकार नहीं की। हम खरीददारी के लिए बाज़ार गए और वहाँ बहुत से लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया। बाज़ार गए, दुकानों पर गए और वहाँ सभी लोग बहुत तेज़ी से आत्मसाक्षात्कार ले रहे थे। उन्होंने जब पूछा तो मैंने उन्हें एक बात बताई कि रूस के लोग उन्हें पसन्द नहीं करते क्योंकि चीन के लोग रूस जाकर विवाह कर लेते हैं और फिर रूसी महिलाओं को तलाक दे देते हैं और अपनी पत्नी को वहाँ ले आते हैं उन्होंने मुझे इसका कारण बताया कि रूस की महिलाएं तलाक देने के लिए बहुत उपयुक्त हैं बहुत ही जल्दी वे तलाक स्वीकार कर लेती हैं। वो अत्यन्त

रौबीली हैं लेकिन रूसी सहजयोगी महिलाएं ऐसी नहीं हैं। परन्तु चीन की महिलाएं ऐसी नहीं हैं। वे अत्यन्त विवेकशील हैं। वो जानती हैं कि उनकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है और ये भी जानती हैं कि उनके बच्चे इस प्रकार से बनने चाहिए कि वो अच्छे चीनी नागरिक बन सकें। प्रायः वो परिवार से बाहर नहीं जाना चाहतीं और न ही अपने बच्चों की अनदेखी करना चाहती हैं, बिल्कुल भी नहीं। उनके धर में यदि कोई दादीमाँ उनके बच्चों की देखभाल के लिए है केवल तभी वे अपने बच्चों को छोड़कर जाती हैं। ये बुजुर्ग महिलाएं भी अत्यन्त स्नेहमय एवं करूण होती हैं। केवल ऐसा होने पर ही चीन की महिलाएं बाहर कार्य करने के लिए जाती हैं ये देखकर मैं हैरान थी कि रूस के लोगों की तरह से वे महिलाएं भी सभी प्रकार के कार्य कर रही थीं। चाहे वे रेलगाड़ियाँ न चलाएं, चाहे वे कारखाने न चलाएं क्योंकि आप जानते हैं चीन की महिलाएं कद–बुत में छोटी हैं और अत्यन्त स्वस्थ भी हैं। परन्तु परमात्मा की कृपा से आप लोगों को उनसे कहीं अच्छा स्वास्थ्य अच्छी ऊँचाई प्राप्त हुई है। आपके डीलडौल की वो भी वास्तव में सराहना करती हैं और कहती हैं देखिए ये लोग कितने विशालकाय हैं और हम उनके सम्मुख बौने हैं! मैं हैरान थी क्योंकि उन्होंने किसी की आलोचना नहीं की। उन्हें इस बात का ज्ञान था कि किस व्यक्ति में, किस खूबी की प्रशंसा की जानी चाहिए। ये अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि वहाँ उपस्थित अमरीकन लोगों के विषय में भी उन्होंने कहा कि वो अभी बच्चे हैं, उन्हें अभी विकसित होना है। ये अत्यन्त आश्चर्य की बात थी। अमरीका के लोग अत्यन्त अपमानजनक व्यवहार कर रहे थे और हर बात पर इठला रहे थे और उन्होंने इतना ही कहा कि ये अभी बचकाने हैं। मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि उनकी सरकार किस प्रकार की है और आपकी कैसी? महत्वपूर्ण बात तो ये है कि हम किस प्रकार के लोग हैं उनपर मैं बहुत हैरान थी। अपने बच्चों के प्रति वे बहुत चिन्तित थीं कि बच्चे किस प्रकार का आचरण करते हैं किस प्रकार बात करते है और उनके सम्बन्ध अन्य लोगों से किस प्रकार के हैं। वो अपने बच्चों को सिखाते हैं कि वो अपनी चीज़ें अन्य लोगों से बाँटें, इन चीज़ों पर केवल उन्हीं का ही अधिकार नहीं है। उनकी चीज़ें सभी बच्चों की हैं।

उनका ये व्यवहार सहजयोग की तरह था, सहजयोग में भी हम चाहते हैं कि सभी लोग मिलकर चीज़ों का आनन्द लें। जिस प्रकार से अपने देश की कला का वो सम्मान करते हैं उसे देखकर मैं हैरान थी। अपने देश के कलाकारों के विषय में वे सब जानते हैं जबकि उनका देश बहुत बड़ा है। वो ये भी जानते हैं कि देश के किस भाग में कौन सी कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती हैं। मैं वास्तव में उन पर बहुत हैरान थी, खास कर पुरुषों पर। भारत में हमारे लोग अत्यन्त निराशाजनक हैं, कला की तो उन्हें

कोई चिन्ता ही नहीं। कला के विषय में वे कुछ नहीं जानते। वो ये भी नहीं जानते कि अपने घर को किस प्रकार साफ करना है या बर्तन किस प्रकार साफ करने हैं, वो कुछ भी नहीं जानते, खाना बनाना तक उन्हें नहीं आता। मैं तो कहूँगी कि वो घर में अन्य बच्चों की तरह से हैं जिन्हें बहुत कुछ सीखना होता है। मेरा विचार है कि इसमें महिलाओं को बहुत बडी भूमिका निभानी होती है क्योंकि महिलाए पुरुषों को अंधकार में बनाए रखने के लिए सभी कुछ करती हैं। पुरुष महिलाओं के हाथों की कठपुतली बने रहें। पुरुषों को न तो सड़कों का ज्ञान है न शहरों का। महिलाएं सभी कुछ जानती हैं। आप यदि उनसे पूछें कि ये गलीचा क्या है? यह किस देश से आया है? तो उनका उत्तर होगा हमें नहीं पता कि यह कहाँ से आया है। आपके लिए यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि आपका देश क्या है। अपने देश को प्रेम करना आपके लिए अत्यन्त आवश्यक है। देश को यदि आप पहचानते ही नहीं, समझते ही नहीं तो किस प्रकार देश से प्रेम करेंगे? अपनी माँ को यदि आप पहचानते ही नहीं तो आप किस प्रकार उन्हें प्रेम करेंगे। वहाँ पर एक बहुत महान शक्ति कार्यरत है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन चीन के लोग भी आप लोगों में पूरी तरह से सम्मिलित हो जाएंगे। प्रेम सम्मान को जन्म देता है। यहां पर आप लोग भिन्न स्थानों से, भिन्न गुणों वाले, भिन्न योग्यताओं वाले लोग आए हुए हैं परन्तु आप परस्पर प्रेम करते हैं। इस बिना पर कि एक का रंग श्वेत है और दूसरे का अश्वेत, आप एक दूसरे का अपमान नहीं करते। क्योंकि प्रेम ने आपको विशेष रूप से ये सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि प्रदान की है। यह दृष्टि आन्तरिक सौन्दर्य, आपके अस्तित्व के आन्तरिक सौन्दर्य को देखती है। एक दूसरे का आप आनन्द लेते हैं क्योंकि आपको प्रेम का मूल्य पता है जैसा मैंने कहा प्रेम अत्यन्त महत्वपूर्ण, अत्यन्त मूल्यवान गुण है परन्तु यह प्रेम पूर्णतः स्वच्छ प्रेम होना चाहिए। इसमें कामुकता और लोभ का कोई स्थान नहीं है। किसी व्यक्ति को इसलिए प्रेम नहीं करना चाहिए क्योंकि आप उस व्यक्ति का लाभ उठाना चाहते हैं, क्योंकि उस व्यक्ति के पास धन है या उसमें किसी प्रकार का आकर्षण है। किसी विशेष कारण से प्रेम किसी के साथ एक रूप नहीं होता, प्रेम तो बस प्रेम के लिए होता है। अतः आप लोग महसूस करें कि आपके अन्दर कौन सी शक्तियाँ हैं। उदाहरण के तौर पर कल जब मैं नहीं पहुँची तो वो लोग सारे दरवाजे और कम्प्यूटर बन्द कर चुके थे मेरी समझ में नहीं आता कि आप लोगों ने कम्प्यूटर क्यों अपना लिए हैं! ये तो ऐसी चीज है जो प्रेम को समझती ही नहीं।

बहुत से वायुयान आ रहे थे और हजारों लोग वहाँ पर एकत्र हो गए थे। बाहर निकलना इनके लिए असम्भव था। दरवाजे बन्द किए जा चुके थे और दरवाजे बन्द करने का कार्य कम्प्यूटरों ने किया था।

दरवाजों के लिए कम्प्यूटर का उपयोग करने की क्या आवश्यकता है? हम इतने अधिक मनुष्य हैं, ये कार्य करने के लिए मनुष्यों को क्यों नही कहा जाता जैसे चीन के लोगों ने किया। वहाँ पर न तो कोई अव्यवस्था थी न भीड़, चाहे कोई भी आए! हज़ारों दस हज़ार, बीस हज़ार लोग वहाँ पर थे और सभी लोग उचित मार्ग से गुजर गए क्योंकि वहाँ पर प्रेम एवं सम्मान था। विश्व के किसी भी कोने में मैंने कम्प्यूटरों द्वारा दरवाजे बन्द करते हुए नहीं देखा। तो एशिया ही क्यों इतना आधुनिक और मशीनीकृत होना चाहता है? मेरी समझ में ये बात नहीं आती। इस मशीनीकरण को यदि आप बहुत अधिक अपना लेंगे तो आपमें प्रेम की शक्ति समाप्त हो जाएगी। पश्चिम में बहुत अधिक मशीनीकरण ने लोगों को नष्ट कर दिया है। उनके हृदय में प्रेम का पूर्ण अभाव हो गया है। देवी की शक्ति रोबोट्स के माध्यम से कार्य नहीं कर सकती। क्या ये कर सकती है? जहाँ तक सम्भव हो आपको मशीनीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है। गणपति पुले में एक बार ऐसा हुआ कि माइक पूरी तरह से एकदम बन्द हो गए और हम संगीत का आरम्भ न कर पाए। दिल्ली सहजयोग से कोई व्यक्ति आया और कहने लगा हमारे पास नोयडा के कुछ लोग हैं जिन्हें माइक्स की आवश्यकता नहीं है। मैंने इन लोगों के विषय में कभी न सुना था। मैं ये भी न जानती थी कि कोई ऐसा संगीतज्ञों का समूह भी है। इससे पूर्व इन्हें पहले कभी मेरे सम्मुख गाने का अवसर न दिया गया था। संभवतः ये लोग ग्रामीण थे। मैंने तुरन्त कहा ठीक है उन्हें तुरन्त मंच पर लाओ और आज आप सब लोग जानते हैं कि नोयडा का संगीत क्या है! अत्यन्त प्रेम पूर्वक इतनी ऊँची आवाज में उन्होंने भजन गाए कि अब विश्व भर में आप नोयडा का संगीत सुन सकते हैं और उनकी ग्रामीण कविताओं को सुन सकते हैं। प्रेम के लिए आपको कृत्रिमता (Sophistication) की आवश्यकता नहीं है। आपमें यदि सच्चा प्रेम है तो आप अत्यन्त भद्र एवं मधुर बन जाते हैं।

प्रेम तो देवी का महानतम आशीष है, प्रेम व्यक्ति को पागल नहीं बनाता। परन्तु कुछ लोग सोचते हैं कि आप यदि किसी से प्रेम करते हैं और आपको आपका प्रेम प्राप्त नहीं हो रहा तो आप किसी की भी हत्या कर सकते हैं। सर्वत्र लोग ऐसे कुकृत्य कर रहे हैं। प्रेम तो इतना पावन है कि यह अत्यन्त शक्तिशाली है और कार्य करता है। जैसे मैं अभी बता रही थी कल ये सब लोग अन्दर बन्द थे। सभी लोग बहुत चिन्तित थे और उन्हें बताना चाहते थे कि वो मुझे बाहर आने दें परन्तु वे किसी की बात सुनने को तैयार ही नहीं थे। मैंने कहा ये बात भूल जाओ। ये मामला मुझे निपटाने दो। मैं जाकर उस सज्जन के सम्मुख खड़ी हो गई, तुरन्त उसने मेरा पासपोर्ट लिया और उस पर मोहर लगा दी। बिना किसी बहस मुबाहसे के, बिना किसी समस्या

के, क्योंकि प्रेम अत्यन्त खामोश है परन्तु यह कार्य करता है। ये अत्यन्त सुन्दर ढंग से कार्य करता है। प्रेम अत्यन्त विवेकशील भी है ये आपको समाधान सुझाता है। ये बात पूरी तरह से सत्य है क्योंकि यह अपनी अभिव्यक्ति करना चाहता है। प्रेम किसी को हानि नहीं पहुँचाता। किसी को कष्ट नहीं देता। मैं हमेशा जड़ के सिरे पर विद्यमान विवेकशील कोषाणु का उदाहरण दिया करती हूँ। जड़ बढ़नी शुरू होती है और ये सूक्ष्म कोषाणु, छोटा सा कोषाणु जानता है कि किस प्रकार पृथ्वी माँ में प्रवेश करते चले जाना है। मान लो इसके मार्ग में कोई पत्थर आ जाए तो यह उस पत्थर के इर्द गिर्द से बड़ी शान्ति से चला जाता है और उसे बाँध लेता है। स्पष्टीकरण ये होता है कि जब ये पेड़ बड़ा होगा तो पत्थर उसे शक्ति प्रदान करेंगे, उसे सहायता देंगे। तो सहज रूप से यह पत्थर के इर्द–गिर्द घूम जाता है और अन्ततः अपनी अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार प्रेम देवी की शक्ति है जो अत्यन्त सूक्ष्म है, अत्यन्त शान्त है, परन्तु अपनी अभिव्यक्ति करती है। इन सभी अभिव्यक्तियों को आप चमत्कार कहते हैं। आप इन्हें कोई भी नाम दे सकते हैं। यही देवी पूरे ब्रह्माण्ड पर शासन कर रही हैं। यही तुम्हारे मध्य हृदय चक्र पर विराजमान है। आपकी तथा पूरे ब्रह्माण्ड की देखभाल करने वाली यह शक्ति प्रेम की शुद्ध इच्छा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। ये जानती हैं कि किस प्रकार अभिव्यक्ति करनी है। ये जानती हैं किस प्रकार कार्य करना है। आपको कुछ नहीं करना पडता स्वतः होता है। आपकी मानसिक गतिविधियां इसके विरोध में जाती हैं क्योंकि मानसिक गतिविधि कहेगी, 'ओह इस प्रकार आप किसी से कैसे प्रेम कर सकते हैं,' इसका कोई लाभ नहीं। आपको इस तरह के अटपटे विचार देने वाली आपकी मानसिक गतिविधियाँ ही हैं। मानसिक गतिविधि सीमित तथा रेखीय है। हर व्यक्ति के भिन्न और सीमित विचार हैं। यही कारण है कि लोग परस्पर लड़ रहे हैं, यही कारण है कि युद्ध किए जा रहे हैं। परन्तु जब प्रेम की यह शक्ति आपको पूर्ण सत्य प्रदान करती है तब आप किस प्रकार युद्ध करेंगे?

अतः हमें प्रेम की इस शक्ति की आवश्यकता है क्योंकि हमारी शारीरि शक्ति अत्यन्त सीमित है। मैं जानती हूँ कि आप सब मुझसे अत्यन्त प्रेम करते हैं परन्तु आपको चाहिए कि परस्पर भी प्रेम करें, एक दूसरे का भी सम्मान करें। केवल तभी मुझे ये महसूस होगा कि प्रेम की इस शक्ति की अभिव्यक्ति हुई है। हम एक सहजयोगी के घर में थे और उसने मुझसे मिलने के लिए अन्य सहजयोगियों को भी बुलाया हुआ था। मुझे उनके घर में रात्रि का खाना खाना था। मैं नहीं जानती थी कि वहाँ उपस्थित अन्य सहजयोगियों के लिए उसने खाना बनवाया है कि नहीं। मैंने उन लोगों से कहा, ठीक है, कार्यक्रम समाप्त हो गया है अब आप अपने घरों को जा सकते हैं।

क्योंकि मैंने सोचा था कि यह व्यक्ति सबके लिए खाना नहीं बनवा सकता। जब सब लोग वहाँ से जाने लगे तो वह दौड़ता हुआ आया, बोला, "श्री माताजी आपने ये क्या किया, मैंने सब लोगों के लिए खाना बनवाय है। वास्तव में? अब ये लोग कहाँ चले गए। ये लोग अभी गली में ही थे। ये दौड़ता हुआ सीढ़ी से नीचे उतरा और उनसे कहने लगा, 'वापिस आओ, वापिस आओ, खाना खाओ'। वो सब हँसने लगे और ये भद्र पुरुष जिसने सभी सहजयोगियों के लिए खाना बनवाया था इतना आनन्दित हुआ। और हम सबने खाने का बहुत आनन्द लिया। रामायण में एक बहुत ही सुन्दर कहानी है। इस प्रेम के विषय में मैं आपको अवश्य बताना चाहूँगी। श्री राम जब जंगल में गए, बनवास के समय जब वे जंगल में पहुँचे तो वहाँ एक बहुत वृद्ध महिला थी जिसके बहुत थोड़े से दाँत बचे थे। परन्तु वह श्रीराम की महान भक्त थी। जीवन पर्यन्त वह श्री राम के दर्शन के स्वप्न देखती रही थी। जब श्री राम ने उसे अपने दर्शन दिए तो वह आनन्द से भर गई। वह ग्रामीण महिला थी, आदिवासी परिवारों से। भारत में आदिवासी परिवारों को बहुत ही नीची जाति का माना जाता है। परन्तु उसने श्री राम के लिए जंगली फल, बेर, एकत्र किए थे। मैं नहीं जानती कि बेरों को आप यहाँ क्या कहते हैं। उसने श्री राम से कहा क्योंकि आप खट्टे फल पसन्द नहीं करते इसलिए मैंने ये सारे फल अपने दांतों से चखे हैं और चखकर ये मीठे–मीठे बेर एकत्र किए हैं। भारत में किसी दूसरे व्यक्ति के मुंह से छुआ हुआ कोई अन्य व्यक्ति खाता नहीं। भारतीय स्वच्छता के नियमानुसार किसी का झूठा खाना अत्यन्त अपवित्र माना जाता है। केवल देवी की झूठन और उनके छूए हुए भोजन को ही पवित्र माना जाता है। लेकिन ये तो बिल्कुल उलट बात थी। शबरी ने अपने चखे हुए झूठे बेर एक अवतरण को समर्पित किए। श्री राम में भी देवी की शक्तियाँ थी। श्री राम ने भी तुरन्त वे बेर शबरी के हाथ से लिए और उन्हें खाने लगे। कहने लगे कि अमृतसम ये बेर मैंने पहले कभी नहीं खाए। उनकी पत्नी श्री सीताजी ने भी उनसे वे बेर लेकर खाए लेकिन उनके भाई लक्ष्मण को इस बात पर क्रोध आ रहा था। वो सोच रहे थे कि इस महिला में मर्यादा की कमी है और उसको दण्डित करना चाह रहे थे। परन्तु जब श्री सीताजी ने श्री राम से बेर माँगे तो वे शान्त हो गए। बेर खाकर श्री सीताजी ने भी वही बात कही कि अमृत की तरह से इतने मधुर फल मैंने कभी नहीं खाए। तो लक्ष्मन जी ने भी सोचा कि ये दोनों सारा अमृत खा रहे हैं मैं क्यों न खाऊं? उन्होंने भी अपनी भाभी से वो फल माँगे। तब श्री सीताजी ने कहा "नहीं–नहीं, तुम तो नाराज़ हो रहे थे, अब क्यों तुम्हें ये फल चाहिए"? उनकी बहुत याचना पर श्री सीताजी ने उन्हें कुछ बेर दिए जिन्हें लक्ष्मण ने खाया और कहने

लगे, वाह इनमें तो सारे फलों का अमृत है। कहने का अभिप्राय ये है कि सारी कृत्रिमता, सारे मशीनीकरण से ऊपर प्रेम की यह गतिशीलता कहीं अधिक है। प्रेम की यह शक्ति आपको उसी प्रकार दी गई है जिस प्रकार श्री गणेश को दी गई थी। आपको चाहिए कि इस शक्ति को धारण करें। एक बार जब आप इसे धारण कर लेंगे तो व्यक्तिगत रूप में या सामूहिक रूप में आप इसे प्रतिपादित कर सकेंगे। किसी व्यक्ति को यदि आप जीतना चाहें तो अपने हृदय में आप कहें ठीक है, 'देवी माँ, कृपा करके इस व्यक्ति पर कार्य करें। मेरा पवित्र प्रेम इस व्यक्ति पर कार्य करे और आप हैरान होंगे कि आप किस प्रकार उस व्यक्ति के हृदय को जीत लेते हैं! 99 प्रतिशत लोग इस पावन प्रेम के पूर्ण नियन्त्रण में आ जाएंगे। इतना ही नहीं, ये पवित्र प्रेम उन सभी नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करता है जो आपको हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रही हैं। ये आपको सिखाता है कि वास्तविकता की पूरी तस्वीर को किस प्रकार समझना है क्योंकि ये तो ऐसा प्रकाश है जो सारे अंधकार को ज्योतिर्मय करता है। आपके अन्दर और बाहर के अन्धकार को। आपमें जब ये प्रेम आ जाता है तो आप अपने अन्दर अत्यन्त शान्त हो जाते हैं और आपकी शान्ति अभिव्यक्त होती है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें

श्री माताजी के अवतरण की भविष्यवाणी

(एक पत्र)

विश्व के सभी सहजयोगी–भाई और बहनों को शेंदुर्णी (महाराष्ट्र राज्य, जिला जलगांव) सेंटर की ओर से जय श्री माताजी

अभी तक विश्व में और भारत भूमी पर सबसे उच्चत्तम तथा सब देवाताओं की शक्ति के साथ श्री आदिशक्ति का अवतरण परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का ही है। यह आप सभी को मालूम है।

यही बात शाहजहाँपुर (मध्य प्रदेश) के सुप्रसिद्ध संत और योगी महात्मा श्री रामचंद्रजी इन्होंने श्री आदिशक्ति माताजी का विश्व का और भारत का युग परिवर्तन कराने के लिये ही अवतरण लिया है। यह भविष्यवाणी स्पष्ट की है।

(अगस्त 1986, अंक क्रमाक 8, युग साधना मासिक पुस्तिका में दिया मराठी लेख का हिंदी अनुवाद)

ऐसा यह अनमोल सा लेख एक दिन 10 या 12 साल का बालक रद्दी बेचने के लिए हाटेल पर आया। उस रद्दी में यह युग साधना पुस्तीका में यह लेख मिला। गाँवों की सभी दुकाने छोड़कर यह बालक सहजयोगी के ही हॉटेल पर कैसा आया इसका मुझे बहुत आश्चर्य लगा! लेकिन इस बात का मुझे पूर्ण विश्वास है कि यकीनन यह योग घटित होने का काम श्री आदिशक्ति निर्मला माँ ने बहुत ही सहज तरीके से कराया। श्री आदिशक्ति निर्मला माँ के चरणों में मेरा शत–शत कोटी विनम्र प्रणाम।

आपका सहजयोगी भाई
श्री राजेन्द्र बी. सूर्यवंशी
शेंदुर्णी, जि. जलगाँव
महाराष्ट्र–424204

भविष्य दर्शनः भारत का और दुनिया का

युग परिवर्तनकारी शक्ति का अविर्भाव हो चुका है
शाहजहाँपुर के महात्मा रामचंद्र जी की भविष्यवाणी
(मराठी लेख का अनुवाद)

जनवरी 1971 में 'राष्ट्रधर्म' नामक पत्रिका में 'दुनिया के भविष्य का एक पूर्व संकेत' नामक एक लेख छपा था। इसमें कई भविष्यवाणीयो के साथ बंगला देश में होने वाले खण्डप्रलय की भविष्यवाणी की गई थी। उसी में बिहार में होने वाले माहापुर और भयकर हानि के बारे में भविष्यवाणी की गई थी। सचमुच में ऐसा होगा इसका कोई संकेत उस वक्त नहीं था। परन्तु उसके बाद सचमुच में 2 समुद्री चक्री तूफान हुए और पूर्वी पाकिस्तान के 20 लाख लोगों के प्राण हर लिये। इस भविष्य कथन के बाद 10–11 माह में ही बिहार में महापुर का ताडंव नृत्य हुआ था।

यह भविष्यकथन शहाजहाँपुर के (मध्य प्रदेश) सुप्रसिद्ध योगी व संत म. रामचंद्र जी ने किया था। योगाभ्यास द्वारा अंतर चेतन में 25–50 वर्षोपरात होनेवाले भविष्य की परीपक्व होती घटनायें, वर्तमान घटनाओं की तरह ही सुस्पष्ट देखी जा सकती है। ऋतुविज्ञान के तज्ञ जानते हैं की आज वर्षा करने वाले बादल 5–6 दिन पहले ही आकाश में जमा होने लगते हैं। वह जिस भाप से बनते है वह कई महीनों से समुद्र में तैयार हो रहीं थी और इसे बनाने वाली कडी धूप उससे काफी पहले से इसकी तैयारी में लग जाती है। साराश आज जो घटना होती है, वह बहुत पहले से शुरू हुई हलचल का परिणाम होता है। तब तक वह घटना योजना व विचारमंथन के स्वरूप में प्रारंभ में केवल मन तक ही मर्यादित रहती है।

भविष्य के संदर्भ में भी कुछ ऐसा ही होना है। ईश्वरी महाशक्तियों को जो कुछ काम करवाना होता है उसकी योजना बहुत पहले से बनायी जाती है। तत्पश्चात वह अपनी सहायक शक्तियों से सलाह–मशवरा करके उन्हें परिवर्तन के कार्य में नियुक्त करती है। प्रत्यक्ष घटना होने से काफी पहले यह घटना सूक्ष्मरूप से अस्तित्व में आती है तथापि युद्ध या तत्सदृश्य वही घटनाओं की सूचना बहुत थोडे लोगों को होती है। और वे उसे औरों से गोपनीय रखते हैं। इसी तरह ईश्वरी विधि–विधान भी केवल निर्मल योगात्मा ही जान सकते हैं। सिध्दांत: यह नितांत सत्य है कि योगी भविष्यकालीन घटना वर्तमान काल की घटनाओं की तरह स्पष्ट देख सकता है। यह कोई बडी अशक्य बात नहीं है।

इस लेख में जिनकी भविष्यवाणी की चर्चा हम कर रहे है उन महात्मा रामचंद्रजी के शब्द कुछ इस प्रकार है– "जब जब इस संसार में कोई देवदूत या अवतार आया, तब तब प्रकृती ने उसके नवनिर्माण से पहले की अवस्था नष्ट करने में उसे मदद की है। उस महासंघर्ष की अवस्था इस

शतक के अंत तक निश्चित रूप से आ जानी चाहिये। परिवर्तन काल अब बिल्कुल पास आ चुका है। अब वह टल नहीं सकता। परमेश्वरी सत्ता मानव रूप मे अपने परमप्रिय पृथ्वी के भारतवर्ष में (जिसे स्वर्गस्वरूप बताया गया है) जन्म ले चुकी है और अपने कार्य में निमग्न हो चुकी है। जब उसका कार्य और योजनायें सब जान जायेंगे तब लोगों को समझ आयेगा कि भगवान रामचंद्र, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान बुद्ध और भगवान परशुराम जैसा अवतार हमारे जीवनकाल में ही आया और हम उसे पहचान भी नहीं पाये, सहकार्य करना तो बहुत दूर की बात है।

संत योगी रामचंद्र जी को यश या नाम कमाने की कोई लालसा नहीं है। सच्चे योगी की तरह वे निश्कामरूप से आत्मकल्याण और लोककल्याण के कार्य में लगे रहते हैं। वे इस भविष्यवाणी से प्रेरणा देते हैं कि जो जागृत आत्माऐं है और जिनके पास विवेक है वे इस विद्यमान देवदूत को पहचानें और उसके नवनिर्माण के महासंघर्ष में हनुमान, नल, नील, अंगद की तरह युक्तीवाहिनी के सेनापति बनकर आगे आयें।

कुछ झांकाखोर लोगों न और आर्य समाज के तार्किकों ने म. रामचंद्रजी को एक शंका पूछी "परमात्मा तो एक सर्वव्यापी सत्ता है, तत्वत: वह अवतार कैसे ले सकते हैं?" इस पर उन्होंने समझाया, "प्रत्येक व्यक्ति में एक अचेतन तत्व क्रियाशील होता है, उसे सांसारिक उहापोह के लिये 'मन' तत्व भी प्राप्त होता है। अचेतन मन (अतीद्रिय जगत का

अधिष्ठान) ये प्रत्यक्ष जगत कारण ही है। मन से ही सारी योजनायें बनती हैं और फिर वे कार्यान्वित होती हैं। परमेश्वर में 'मनस्' शक्ति नहीं होती। तथापि मानवजाति के उद्बोधन के लिये वा मार्गदर्शन के लिए 'मनस्' शक्ति की आवश्यकता होती है। इसीलिये अदृश्य चेतना के स्वरूप में कार्य करने वाली सत्ता को मनसे परिपूर्ण होने के लिए किसी एक शरीर में व्यक्त होना पडता है। शरीर में रहकर भी, शरीर की कोई भी आसक्ति उसे नहीं होती। काम,

क्रोध, लोभ, मोह आदि मनोविकार उसे स्पर्श भी नहीं कर सकते। वह भूत–भविष्य सब कुछ जानती है, फिर भी अन्य मानवों की तरह ही काम करती है। तथापि उसका अतीद्रिय ज्ञान, सामर्थ्य, तथा मनोबल इतना प्रचंड और प्रखर होता है कि दुनिया का कोई सा भी दुस्तर से दुस्तर कार्य, असंभवनीय कार्य उसे सहज शक्य हो जाता है। ऐसी ही एक दिव्य सत्ता भारतवर्ष में आजकल कार्य कर रही है। जल्दी ही लोग उसे पहचानने लगेंगे।

अपनी इस भविष्यवाणी में एक तरफ म. रामचंद्र जी ने इस दिव्यसत्ता के प्रचंड सामर्थ्य के बारे में बताया है वहीं इसे पहचानने के लिये निशानी बतायी है। उनकी भविष्यवाणी का यह भाग बार बार पढ़कर याद करने योग्य है। वह कहते हैं कि सूर्य

की गर्मी पिछले कुछ समय से कम होती जा रही है। इससे सारे वैज्ञानिक चिंतित हैं। इसका कारण उन्हें समझ में नहीं आ रहा। सूर्य की ऊर्जा अगर इसी तरह कम होती गयी तो भौतिक साधन होने के बावजूद मानवजाति का अस्तित्व ही खतरे में आ सकता है। ऐसा डर उन्हें लगा हुआ है। इस संकट से बचने का कोई भी उपाय उनको सूझ नहीं रहा।

योगाचार्य रामचंद्र कहते हैं कि सूर्य की शक्ति का यह असामान्य और अपूर्व ह्रास, मनुष्य रूपमें इस ईश्वरी शक्ति का किया हुआ परिवर्तन है। प्रकृति जो भी परिवर्तन करती है वह सूर्य के परिवर्तन से ही होता है क्योंकि सूर्य ही दृश्य जगत का आत्मा है। सूर्य के तीव्र ह्रास का प्रयोजन है कि अपेक्षित परिवर्तन तीव्रसा से, जल्दी से जल्दी आ जाये। इस शक्ति का उपयोग ईश्वर द्वारा नियुक्त यह अवतार ही कर रहा है। ये कार्य पूर्ण होते ही जब प्रकृति की नयी व्यवस्था सुचारू रूपसे स्थापित हो जायेगी तब सूर्य फिर एकबार अपनी (वतपहपदंस) प्रखरता धारण कर लेगा।

अतैव यह सिद्ध होता है कि यह नया अवतार महान सावित्रशक्ति–गायत्रीतत्व वा सूर्यशक्ति संपन्न सिद्ध होगा। नवसृजन के अवतार के ये स्पष्ट लक्षण है।

योगीराज जी ने और भी कई भविष्य–वाणीयाँ की हैं जो सत्यसिद्ध होने का इतंजार कर रही हैं। वे कहते हैं कि मैंने अपनी अतींद्रिय योगदृष्टी से देखा है कि लंदन में एक भयंकर ज्वालामुखी का उद्रेक होगा। इंग्लैंड का दक्षिणी भाग समुद्र में डूब जायेगा। इंग्लैण्ड का हवामान अतीशीतल हो जायेगा। एशिया, अमेरीका और यूरोप के आज बड़े प्रगत और वैभवसंपन्न देश जो जागतिक राजकारण में मनमाना स्वराचार कर रहे हैं, उनका भविष्य तो बड़ा ही अधंकार पूर्ण है। जो मार्क्सवाद एशिया और बाकी कई स्थानों पर सुप्रतिष्ठित बन गया है उसका दफन एशिया में ही होने वाला है। अमरीका की सारी समृद्धि मिट्टी में मिल जायेगी। गल्फ स्ट्रीम के बहाव की दिशा भी बदल जायेगी। इस दौरान भारतवर्ष अपनी अध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक तथा राजकीय उन्नति करते हुए सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हो जायेगा और पुनश्च पूरी मानवजाति का और संसार का नेतृत्व करने का सामर्थ्य प्राप्त करेगा। तदपश्चात प्रदीर्घकाल तक विश्व का नेतृत्व भारत के हाथों में रहेगा।

म. रामचंद्र जी कहते हैं कि आज का बुद्धिवाद और नास्तिकता धर्म एवं अध्यात्म संबंधी उत्कट श्रद्धा में बदल जायेगा। इसके लिये जो ईश्वरी शक्ति प्रकट हुई है वह अंहभाव से पूर्ण तथा मुक्त रहेगी। शरीर में रहकर भी वह एक नितांत भावनाओं से सृजन की हुई भावमूर्ती होगी। वह असलियत में मानव मन के स्थान पर ईश्वरी मन से युक्त होगी। सैंकड़ो, हजारों दुःखी जनों की मदद करते हुए वह युगपरिवर्तन की प्रक्रिया पूर्ण कर रही है।

इस नवअवतार का सबसे महत्वपूर्ण कार्य होगा महासंघर्ष का संचालन करना। इस कार्य में उसकी विचारशक्ति एवम् दृश्य आत्मशक्ति कार्यशील रहेगी। एक तरफ यह शक्ति विश्वभर में आतंरिक विचारक्रांती का तूफान लायेगी, और दूसरी ओर प्रकृती को क्षुब्ध करके महा–भंयकर स्थिती का निर्माण करेगी। कॉलरा, युद्ध, अतिवृष्टी इत्यादि सभी इस मनुष्यरूपी ईश्वरी सत्ता की रुद्र प्रक्रिया होगी। ये सब बहुत ही भयानक और अटपटा लगेगा। तथापि आज जगभर में जो जराजीर्ण, सड़ी गली विकृतियाँ फैली हुई हैं, इन जख्मों को धोकर स्वच्छ करते हुए वेदनायें तो होंगी ही। यह पीड़ाप्रद परिस्थिति में ही स्वच्छ होगी। इसके बाद जो संसार बचेगा वह एक नवयुग होगा, एक स्वर्गीय सत्ययुग होगा। तब भारतीय अध्यात्म सारे विश्व में फैलेगा, और दुनिया के समस्त मानव वर्णभेद, जातिभेद, संस्कृतिभेद, लिंगभेद इन सबसे मुक्त हो जायेंगे और मानवता के आदर्श सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए जीवन–यापन करने लगेंगे। ईश्वरी प्रक्रिया आजकल इसी कार्य में निमग्न है।

यह भविष्यवाणी केवल कौतुहुल–पूर्तता के लिये नहीं कही गयी है। अतींद्रिय दृष्टाकी इसके पीछे की प्रेरणा समझनी चाहिये। अगर हमारा अतःकरण किसी ईश्वरी दिव्य सत्ता का अस्तित्व स्वीकार करता हो, तो उसके कार्य में मदद और सहकार्य करने का साहस भी प्रकट करना चाहिये।

आवाजें (Voices)

(Andrew Law)

(अल्बर्ट हाल लन्दन, जनकार्यक्रम में पहली बार आए साधक की सहज अभिव्यक्ति)

21 वर्ष की आयु में यह साधक जब महाविद्यालय में विद्यार्थी था तब से इसे अपने मस्तिष्क के अन्दर से कुछ आवाजें सुनाई देने लगीं। ये आवाज़ें सदैव उसे आत्म हत्या द्वारा जीवन का अन्त करने की प्रेरणा देतीं, उसकी स्थिति इतनी खराब हुई कि वह अपनी तुलना शारलोट ब्रान्त (Carlotte Brante) के प्रसिद्ध उपन्यास जेन आयर की नायिका जेन से करने लगा। जेन को अपने अन्दर से श्री रोचेस्टर

(Mr. Rochester) की भूत–ही आवाज़ें सुनाई देती थीं। इस मनो–वैज्ञानिक स्थिति से वह विभाजित व्यक्तित्व (Split Personality) हो गया था। जेम्स (James Joyce) के Potrait of the Artist as a Young Man का हवाला देते हुए वो कहता है कि, "परमात्मा ने बहुत सी आवाज़ों में आपसे बात की परन्तु आप उन पर ध्यान नहीं देते।" (God Spoke to you by so many voices but you would not hear) जेम्स जॉयस के इस वाक्य से वह बहुत प्रभावित हुआ और स्वयं से प्रश्न किया कि "क्या हम सत्य की आवाज़ की ओर ध्यान देते हैं? अन्तर्विश्लेषण करते हुए ये साधक आगे कहता है कि ये आवाज़ें प्रेरणात्मक होती हैं परन्तु, "मुझे लगता है मेरी समस्याओं का सर्वोत्तम समाधान भारतीय

ध्यान धारणा की सहजयोग शैली में है। सहजयोग का अभ्यास अब विश्व भर में किया जा रहा है। इसका श्रेय उन सब सहजयोगियों को जाता है जो बिना कोई पैसा लिए (विश्वास नहीं होता) इसका संदेश जनजन तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। सहजयोग में भिन्न धर्मों तथा सन्तों के सार तत्व को स्थान दिया गया है और इसमें शान्ति और

आध्यात्मिक उन्नति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी

धर्मों के लोग सामूहिक रूप से भाग ले सकते हैं। मेरी आवाज़ों (Voices) की तथा मेरे स्वास्थ्य की समस्याओं का सहजयोग सर्वोतम समाधान है। मैं आशा करता हूँ कि मॉड्ज़ले अस्पताल (Maudsley Hospital) लन्दन के धर्म क्षेत्र (Faith Zone) में भी सहजयोग ध्यान धारणा आरम्भ की जानी चाहिए क्योंकि यहाँ पर चिकित्सा विशेषज्ञ तथा

धार्मिक लोग धर्म तथा मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर्सम्बन्ध खोजने का प्रयत्न कर रहे हैं।

एन्ड्रयू लॉ

सहजयोग का सार तत्व

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

लन्दन

आज के प्रवचन में मैं सहजयोग के सार के विषय में बताऊंगी। सर्व प्रथम हमारे लिए ये समझना आवश्यक है कि हम एक भयानक समय में से गुज़र रहे हैं जिसके परिणाम के विषय में कुछ कह पाना सम्भव नहीं है। जीवन पर दृष्टि डालकर ऐसा लगता है कि हम ये नहीं समझ पाते कि हमने अपने सम्मुख़ आए उत्थान के इस अवसर को यदि खो दिया तो हम न केवल इस देश इंग्लैण्ड को ही उत्थान से वंचित करेंगे बल्कि ये पूरी मानवता के लिए गहन हानि होगी। परन्तु समस्या ये है कि परमात्मा, उत्थान और उच्च जीवन के नाम पर मिथ्या लोगों का एक बहुत बड़ा समूह निकल पड़ा है और यह किसी को भी सत्य के अस्तित्व के विषय में समझाना लगभग असंभव बना रहा है।

कभी–कभी तो मुझे लगता है, कि मैने एक ऐसा अद्वितीय तरीका विकसित कर लिया है जिसके माध्यम से मैं विश्व भर में सामूहिक रूप से आत्मसाक्षात्कार दे सकती हूँ। परन्तु जनता का आत्मसाक्षात्कार में रूचि न लेना मेरे सामने समस्या खड़ी कर देता है। सत्य बात तो ये है कि बहुत ही कम लोग अपने उत्थान की प्रक्रिया में गहन रुचि रखते हैं और जो उस अंधकार से ऊपर उठकर, जिसमें वे फँसे हुए हैं, आत्मसाक्षात्कार के लिए आना चाहेंगे। अहंकार वादी सभी देशों में ये बात समझाना कठिन होगा कि सच्चाई ये है कि अभी तक भी वे अंधकार में हैं। हमें बहुत कुछ सीखना है क्योंकि वो लोग चाँद तक पहुँच चुके हैं इसलिए वो सोचते हैं कि वो सभी कुछ जानते हैं। उनकी अज्ञानता के विषय में बता पाना अत्यन्त कठिन कार्य है। उदाहरण के रूप में ये कहते हैं कि जब वो अंतरिक्ष में चक्कर लगा रहे थे तो उन्हें कोई परमात्मा दिखाई नहीं दिया। ऐसा कहना तो ऐसे हुआ कि एक व्यक्ति तीसरे तल तक गया परन्तु उसने शिखर को नहीं देखा।

परमात्मा का निवास कहाँ है? वो अपनी अभिव्यक्ति कहाँ करते हैं? हमारे अन्दर क्या वो इसी प्रकार से अपनी अभिव्यक्ति करते हैं? हम ये नहीं जानते कि क्या देखना है। जो कुछ हम देखना चाहते हैं उसे देख पाना हमारे प्रयत्नों के माध्यम से ही सम्भव है। "अगर हम परमात्मा को नहीं

देख पाए हैं तो उसका अस्तित्व ही नहीं है"। इस विषय पर हम इस प्रकार से अपना दृष्टिकोण बनाते हैं तो क्यों नहीं हम उन सारी चीज़ो को अमान्य कर देते जिन्हें हमने अपने प्रयत्नों से नहीं जाना? क्योंकि हम उनके (परमात्मा) विषय में नहीं जान पाए इसलिए वे हैं ही नहीं, उनका अस्तित्व ही नहीं है! आप एक गुफा में धूम रहे हैं। जब आप अपनी ही परछाई को देखते हैं और विश्वास करते हैं, फिर भी कहते हैं किसी अन्य चीज़ का अस्तित्व ही नहीं है। प्रकाश का अस्तित्व नहीं है। निरन्तर मैं इस प्रकार के दृष्टिकोण का सामना करती रही हूँ। कभी कभी तो मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार उन्हें आत्मसाक्षात्कार दूं। अब आपको दूसरी प्रकार से आरम्भ करना होगा। आपको जिज्ञासु होना होगा, आपको इसकी याचना करनी होगी। कोई आकर आपके चरणों में गिरकर ये नहीं कहेगा कि कृपा करके अपना आत्म–साक्षात्कार ले लीजिए। 'कृपा करके, परमात्मा के लिए इसे प्राप्त कर लीजिए' क्योंकि यहाँ कोई कुछ बेचने के लिए तो नहीं आया है। यहाँ कुछ भी नहीं बिक रहा।

आपको विपणन की आदत है। कोई यदि कुछ बेच रहा होता तो वह आपको समझाने की कोशिश करता और आपसे प्रार्थना करता। विपणन पर आप अपने पाऊंडस बचा सकते हैं परन्तु यहाँ तो कुछ बेचने के लिए है ही नहीं। आज के इस वातावरण में जहाँ हम इस बात से अनभिज्ञ हैं हम ऐसी चीज़ भी पा सकते हैं जो बिकाऊ नहीं है। जो भी हो हमें कठोर परिश्रम करना होगा। जिस प्रकार लोग से प्रतिक्रिया करते हैं वह कभी–कभी तो अत्यन्त निराशा जनक तथा मूर्खतापूर्ण होता है। जैसे उस दिन ब्रिटेन की एक सभा में मैं पूरा समय हँसती ही रही। ये कितने खेद की बात है। एक सज्जन हमारे कार्यक्रम में आए और उन्होंने शिकायत की कि देखिए, किसके पास समय है वीडियो देखता रहे? उनका फोटोग्राफ लेने में किसकी रूचि है? वे कहते हैं कि वे प्रबन्ध निदेशक हैं तो क्या परमात्मा के सम्मुख एक प्रबन्ध निदेशक क्या होता है, या राजा भी क्या होता है? इस बात को सोचें। वह क्या है? अपने विषय में वो क्या सोचता हैं उसने हमारी शिकायत की तो कभी कभी तो, कानून भी इतने मूर्खतापूर्ण है कि व्यक्ति के लिए उसे समझ पाना कठिन है। मुझे लगता है कि उनके मस्तिष्क पर इतना मैल चढ़ गया है कि वे आत्मसाक्षात्कार नहीं लेंगे। हो सकता है कि वे ये अवसर खो दें।

वास्तव में परमात्मा स्वयं नहीं जानते कि उन्होंने किस प्रकार के मानव की रचना की। मैं आपको बताती हूँ, कि जो मूर्खताएं आपने अपने चहुँ ओर बना ली हैं उनका ज्ञान परमात्मा को भी नहीं है। अपने अज्ञानान्धकार से आपने सभी प्रकार की मूर्खताओं का सृजन कर लिया है। अपने अहंकार से, अपने चयन की स्वतंत्रता से आपने ये सब कुछ कर लिया है। इस बात

की व्याख्या मैं नहीं कर सकती कि लोगों ने इस प्रकार के अज्ञानान्धकार का सृजन क्यों कर लिया है जिसे न तो तोड़ा जा सकता है न दूर किया जा सकता है। आप लोग इस

अंधकार से इतने एकरूप हैं। ये तो चिपके हुए मोहर (जंउच) की तरह से है जो छुटना ही नहीं चाहती। जब ऐसा कुछ घटित होता है तो आप सोचते हैं "हे परमात्मा।" पूरी सृष्टि का सृजन किया गया है सभी कार्य किए गए हैं फिर भी मानव इस अवस्था तक पहुँच गया है! परन्तु अब इस आधुनिक जीवन में, जो आप यापन कर रहे हैं, आपको लगता है कि लोग इतने मूर्ख हैं कि अपनी मूर्खता से, अपनी जाहिलता से वो दूसरे लोगों को भी भ्रमित कर रहे हैं। परन्तु जो लोग वास्तव में साधक हैं उन तक कैसे पहुँचा जाए? उन लोगों तक जो युग युगान्तरों से साधक हैं। उनके सारे पूर्व जन्म व्यर्थ हो गए हैं। ये बात अत्यन्त निराशाजनक लगती है। परन्तु सारी निराशाओं के मध्य अभी भी मुझे आशा है कि हम ब्रह्माण्ड के सभी कोनों में पहुँच जाएंगे और सभी स्च्चे साधकों को खोज लेंगे। उनकी ये इच्छा है कि परमात्मा को पा लें।

परमात्मा का ज्ञान पा लेना सभी साधकों की शक्ति है। परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करना राजाओं या प्रबन्ध निदेशकों या बडे बड़े लोगों के लिए नहीं है। परमात्मा के सम्मुख इन सब चीज़ों की क्या कीमत है? उन्हें बाहर खदेड दिया जाएगा। परमात्मा के साम्राज्य में उन्हें प्रवेश नहीं करने दिया जाएगा। ये साम्राज्य केवल उन्ही लोगों के लिए है जिन्होंने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है। केवल परमात्मा की बातें करने वालों के लिए परमात्मा का साम्राज्य नहीं है। जो लोग कहते हैं, हम परमात्मा के पुजारी हैं, हमने इतना कुछ सीख लिया है, यदि इतना कुछ है तो ठीक है अब जहाँ से आप आए थे वापिस चले जाओ। आपने जो कुछ भी ज्ञान पाया वह अपनी चेतना के माध्यम से पाया और अपनी ही चेतना में आपको जानना है। परन्तु ये चेतना ज्योतिर्मय होनी चाहिए। ये बात आप नहीं जानते। मानवीय चेतना को अभी और उन्नत होना है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् भी उन्नत होने के लिए इस चेतना को बहुत लम्बी यात्रा करनी पड़ती है।

बहुत से लोगों को सामूहिकता में आत्मसाक्षात्कार देने के लिए कभी कभी कुछ भी समय नहीं लगता। मैं जानती हूँ, ऐसा बहुत बार घटित हुआ परन्तु लोग नहीं जानते कि उन्हें क्या प्राप्त करना है। अहंकार इतना भयानक दुर्गुण है कि लोग ये देखना भी नहीं चाहते कि उनमें क्या कमी है? उन्हें क्या पाना है और क्या पाने की योग्यता उनमें है। वे उस सौन्दर्य को, उस प्रकाश को जो कि आत्मा है देखना भी नहीं चाहते। परमात्मा के प्रेम का प्रतिबिम्ब, सोची जा सकने वाली बहुमूल्यतम चीज़ है।

इंग्लैण्ड में सहजयोग बढ़ने की गति बहुत ही धीमी रही। यदि ईसा मसीह के समय से ऐसा होता तो मुझे निराशा न होती क्योंकि उस समय बहुत कम साधक थे। वास्तव में ईसा के बहुत समीप रहने वाले भी सत्य साधक न थे। परन्तु आप सत्य साधक हैं। आपमें से बहुत से लोगों ने सत्य साधना करने के लिए इस मार्ग को अपनाया है। परन्तु हम जा कहाँ रहे हैं? इसके विषय में हम क्या कर रहे हैं? सत्य के विषय में हमारे विचार क्या हैं? क्या हमारे विचार हमारे अहं की देन नहीं हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम सत्य को खोजना ही नहीं चाहते? इस देश के बहुत से बडे बडे लोगों से मैं मिली, उन लोगों से जो महत्वपूर्ण पदों पर आरूढ़ हैं, लार्ड हैं, लेडीज़ हैं और बहुत से अन्य उच्च लोग हैं। वे कहते हैं, "परिवर्तित कौन होना चाहता है?" क्यों कि उनका तो सोचना ये है कि वो महानतम हैं। ऐसे हालात में उत्पन्न होकर वे अपने पद, अपने लार्डस, और अपनी भौतिक उपलब्धियों को मृत्योपरांत स्वर्ग में अपने साथ ले जाना चाहते हैं! वो कहते हैं, "कौन परिवर्तित होना चाहता है?" और क्या कहा जा सकता है सिवाए इसके कि वे अन्तिम छोर पर पूर्ण विराम पर पहुँच गए हैं। इसके आगे यात्रा सम्भव ही नहीं है।

मैं कहना चाहती हूँ कि आत्मसाक्षात्कार केवल उन्हीं लोगों को प्राप्त हो सकता है जो साधक हैं, आत्म साक्षात्कार को प्राप्त करना चाहते हैं और अपनी चेतना के माध्यम से जानना चाहते हैं कि सत्य क्या है। आपको अपनी आत्मा को पहचानना होगा। बिना अपनी आत्मा का ज्ञान प्राप्त किए आप सत्य को नहीं जान सकते। और जो भी बातें मैं आपसे करती रहूँ केवल समय को बर्बाद करना होगा क्योंकि अभी तक आपमें चेतना नहीं है। सत्य का ज्ञान प्राप्त करने की चेतना नहीं है जिसके विषय में मैं बात कर रही हूँ। इसीलिए मैं अत्यन्त विनम्रता से आपसे कहती हूँ कि आत्मा बन जाएं। आपको जो कुछ करने के लिए कहा गया है उसे करने में आपको हिचकिचाहट कैसी? ऐसा करके ही आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकेंगे। सर्वप्रथम आपको आत्मा बनना होगा। जब तक ये चेतना ज्योतिर्मय नहीं हो जाती आप देख नहीं सकते। ये तो अन्धे व्यक्ति के सम्मुख प्रकृति के रंगो का वर्णन करने जैसा होगा। आपको अपनी आँखे खोलनी होंगी। परन्तु ऐसा करना लोगों को बहुत कठिन लगता है। वो इतने मूर्ख हो गए हैं कि वो ये भी नहीं समझते कि ये क्या है और इसको समझने की उनकी कोई इच्छा भी नहीं है!

कोई आपसे कहता है कि वहाँ जो पेड़ है उसकी जड़ें हैं। परन्तु आप इस बात पर विश्वास ही नहीं करते क्यों कि जड़ें दिखाई ही नहीं दे रहीं। तो क्यों न जडों को खोजने का प्रयत्न कर लिया जाए? मान लो कोई कहता है 'बाहर जो कुछ है उससे कहीं अधिक अंदर है' तो क्यों न इसे देख

लिया जाए। उसे देख लेने के मार्ग में बाधाएं क्यों उत्पन्न की जाएं, विशेष रूप से जब यह विश्व की सर्वोत्तम उपलब्धि प्रदान करने वाला हो या आत्मा नामक अत्यन्त सुन्दर चीज़ की एक झलक प्रदान करने वाला हो तो क्यों न इसे प्राप्त कर लें। आपको इसके लिए कोई पैसा नहीं खर्चना, कोई कष्ट नहीं उठाना, आपको कुछ नहीं करना।

परन्तु इसके लिए आपमें 'शुद्ध इच्छा होनी चाहिए। यही बात मैं आपको समझाने का प्रयत्न कर रही हूँ। जब तक आपके हृदय में इसे प्राप्त करने की शुद्ध इच्छा नहीं है तब तक परमात्मा आकर आपके चरणों पर गिरकर आपसे प्रार्थना नहीं करेंगे कि कृपा करके मुझे प्राप्त करने की इच्छा कीजिए। ये बात यदि आपकी समझ में आ जाएगी तो वास्तव में आप इच्छा करेंगे क्योंकि यह अत्यन्त इच्छा योग्य चीज़ है। मैं आपको बता दूँ कि यह कुण्डलिनी ही आपके अतःस्थित शुद्ध इच्छा है। यह अभी प्रकट नहीं हुई है, अभी जागृत नहीं हुई है, अर्थात इसने अभी कार्य नहीं किया है। कल्पना करें कि यह कितनी महत्वपूर्ण है? आपको इच्छा करनी चाहिए कि परमात्मा से एक रूप हो जाएं, आत्मा के साथ आप समग्र हो जाएं। ये इच्छा अत्यन्त दृढ़ होनी चाहिए। यदि ऐसा न होगा तो आप कुण्डलिनी को चुनौती देंगे, अर्थात आप कुण्डलिनी विरोधी बन जाएंगे। ऐसी स्थिति में कुण्डलिनी उठेगी नहीं। अहं के साथ आपकी इतनी समग्रता है कि किसी साँड को सींगों से पकड़कर नियंत्रित करना आसान है परन्तु किसी अहंवादी को सहजयोग अभ्यास में लगा पाना कठिन है।

आज अहंवादी लोगों से मैं निराश हूँ। परन्तु और भी भावनाएं आती हैं, करुणा और अगाध प्रेम की भावनाएं। इन लोगों में विवेक उत्पन्न करने के लिए मुझे अवश्य कुछ करना चाहिए। इनके साथ कुछ होना ही चाहिए अन्यथा मुझे पूर्ण विनाश नज़र आ रहा है। ऐसा हो जाएगा। मैं आपको उस तरह से डराना नहीं चाहती जैसे श्रीमती थैचर रूसी लोगों के विषय में करती हैं। यह सब काल्पनिक हो सकता है परन्तु यह वास्तविक है। मैं आपको चेतावनी देती हूँ कि विनाश विनाश के रूप में आने वाला है। परन्तु सबसे बडी बात तो उस इच्छा का असफल होना है कि वो आपमें प्रसारित न हो सकी आपने जिसे परमात्मा का साम्राज्य लाने के लिए चुना है। परन्तु अचानक आप देखेंगे कि वो सब लोग नाले में पड गए है जहाँ से निकलने के लिए उनके पास कोई मार्ग नहीं है। कभी कभी सहजयोगियों को भी निराशा होती है। जो भी कुछ हो, जहाँ तक मैं देखती हूँ, उनमें अगाध इच्छा है। परन्तु मैं इच्छाविहीन हूँ, इतनी इच्छाविहीन कि हो सकता है इच्छाएं सदैव कार्यान्वित न हों। आप जानते हैं कि मैं इच्छाविहीन व्यक्ति हूँ। इसलिए सहजयोगियों से अनुरोध है कि उन्हें इच्छा करनी चाहिए ताकि लोगों में आत्मा बनने

की महान इच्छा जागृत हो। ये महानतम चीज है जो हम अपने भाइयों, बहनों, लोगों, बच्चों को वह सुन्दर प्रकाश, सुन्दर समय दे सकें जिसका उन्हें आनन्द लेना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि जो लोग पहली बार आए हैं वो मेरी कठिनाई को समझेंगे और यह देखने का प्रयत्न करेंगे कि आपको अपने आत्म साक्षात्कार की इच्छा करनी चाहिए, किसी और चीज की नहीं। केवल उसकी इच्दा करें बाकी सब चीजों को भूल जाएं चाहे आप प्रबन्ध निदेशक हों या बादशाह।

अपने जूते बाहर रखें और अपनी आत्मा की इच्छा करें। मेरा प्रयत्न है कि किसी भी तरह से आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाए। मेरी इच्छा एक माँ की इच्छा सम है कि बच्चे को स्नान करवा दिया जाए और उसे शुद्ध कर दिया जाए। तो जिस प्रकार आप चाहेंगे मैं कार्य करने के लिए तैयार हूँ परन्तु कम से कम इस बारे में विश्वस्त करें कि आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने की इच्छा है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें

चमत्कारिक तस्वीरें

आकाश में
श्री गणेश

मई, 1994, गुलबर्न, आस्ट्रेलिया

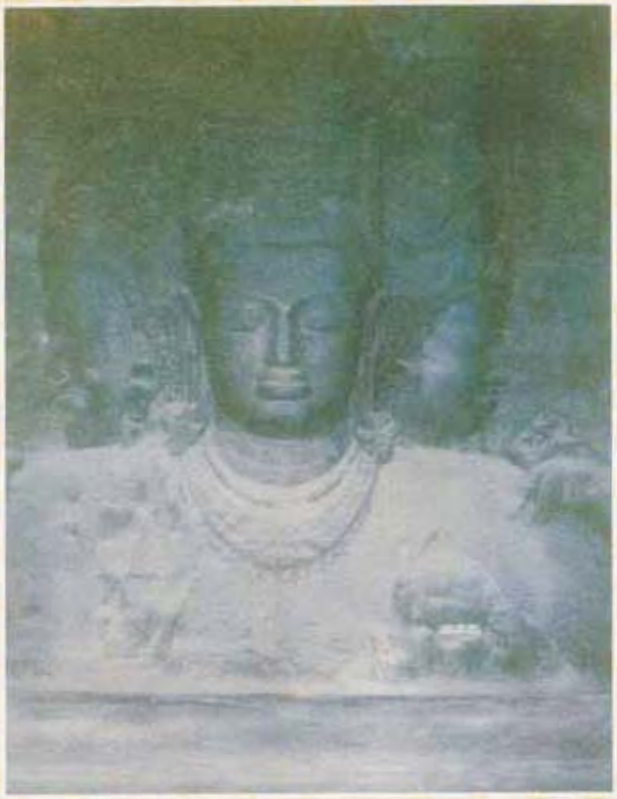

श्री शिव प्रतिमा, एलिफैन्टा गुफा
मुम्बई, 1985

(एक विदेशी सहज योगी द्वारा)

श्री शिव प्रतिमा, एलिफैन्टा गुफा
मुम्बई, 1985

(10 मिनट के ध्यान पश्चात्
एक विदेशी सहज योगी द्वारा)